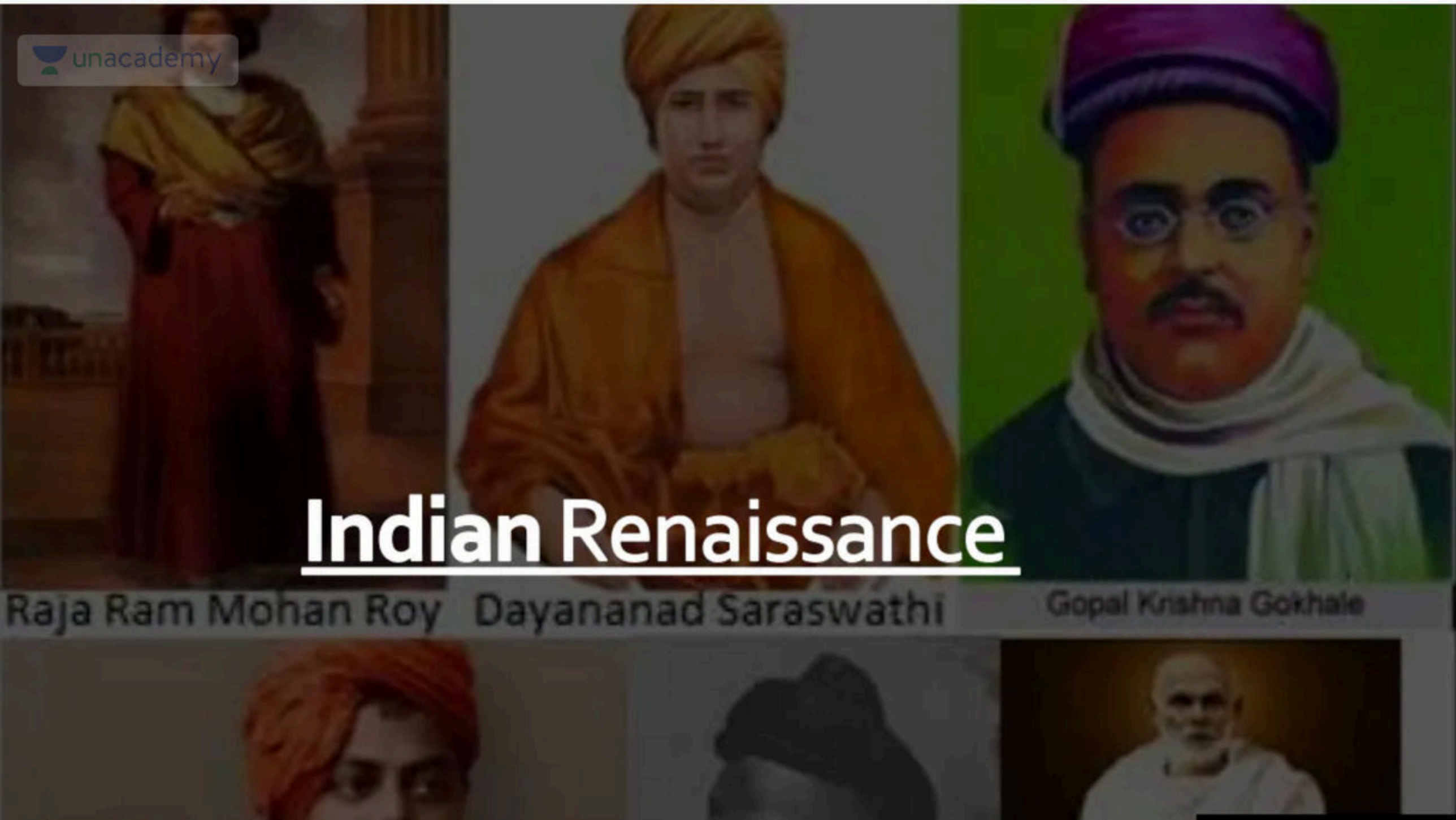
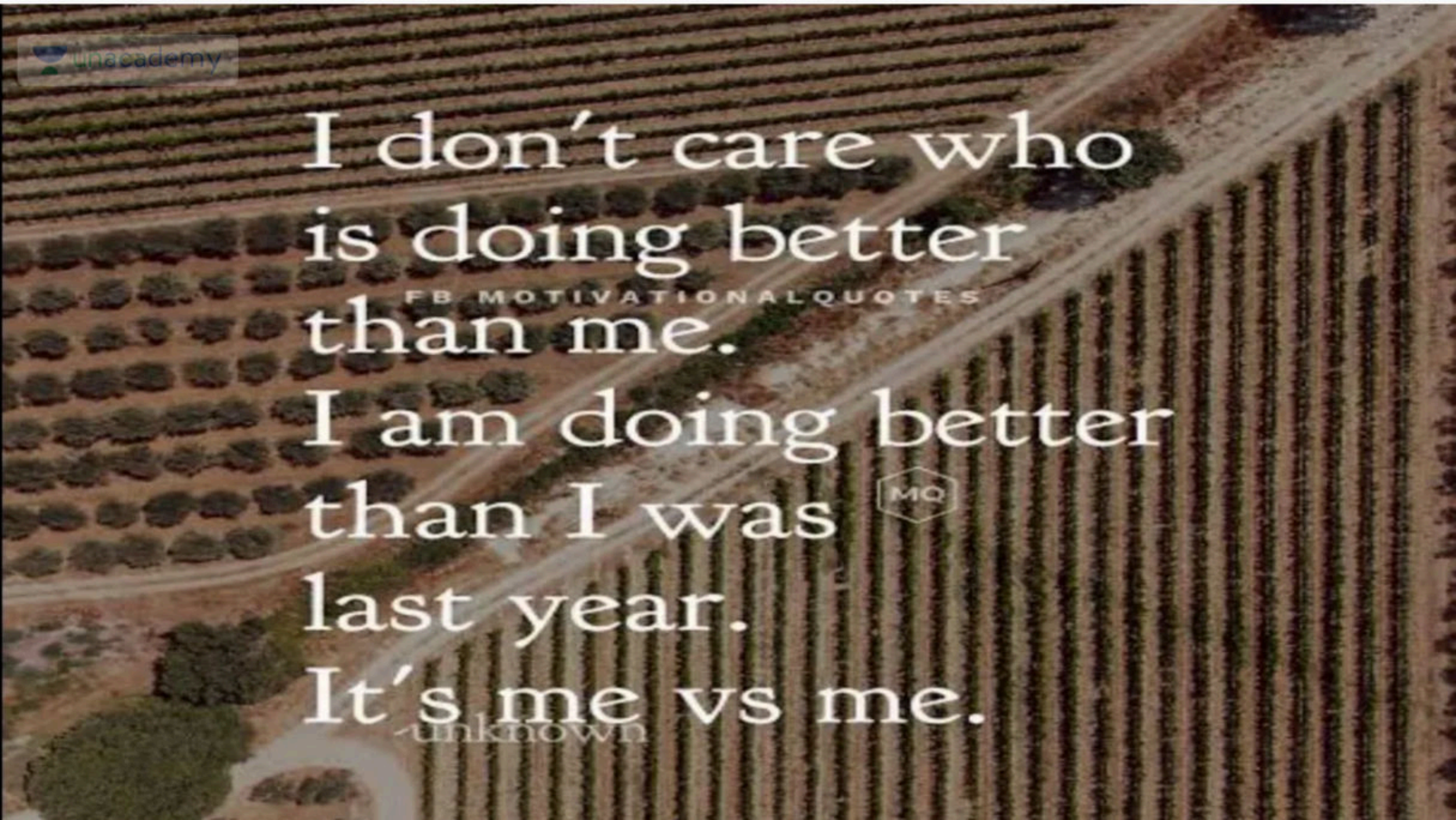
unacademy

Modern History - Indian Renaissance - Practice

Special class

Shachi Tiwari • Aug 25, 2023


unacademy
Indian Renaissance
Raja Ram Mohan Roy
Dayananad Saraswathi
Gopal Krishna Gokhale

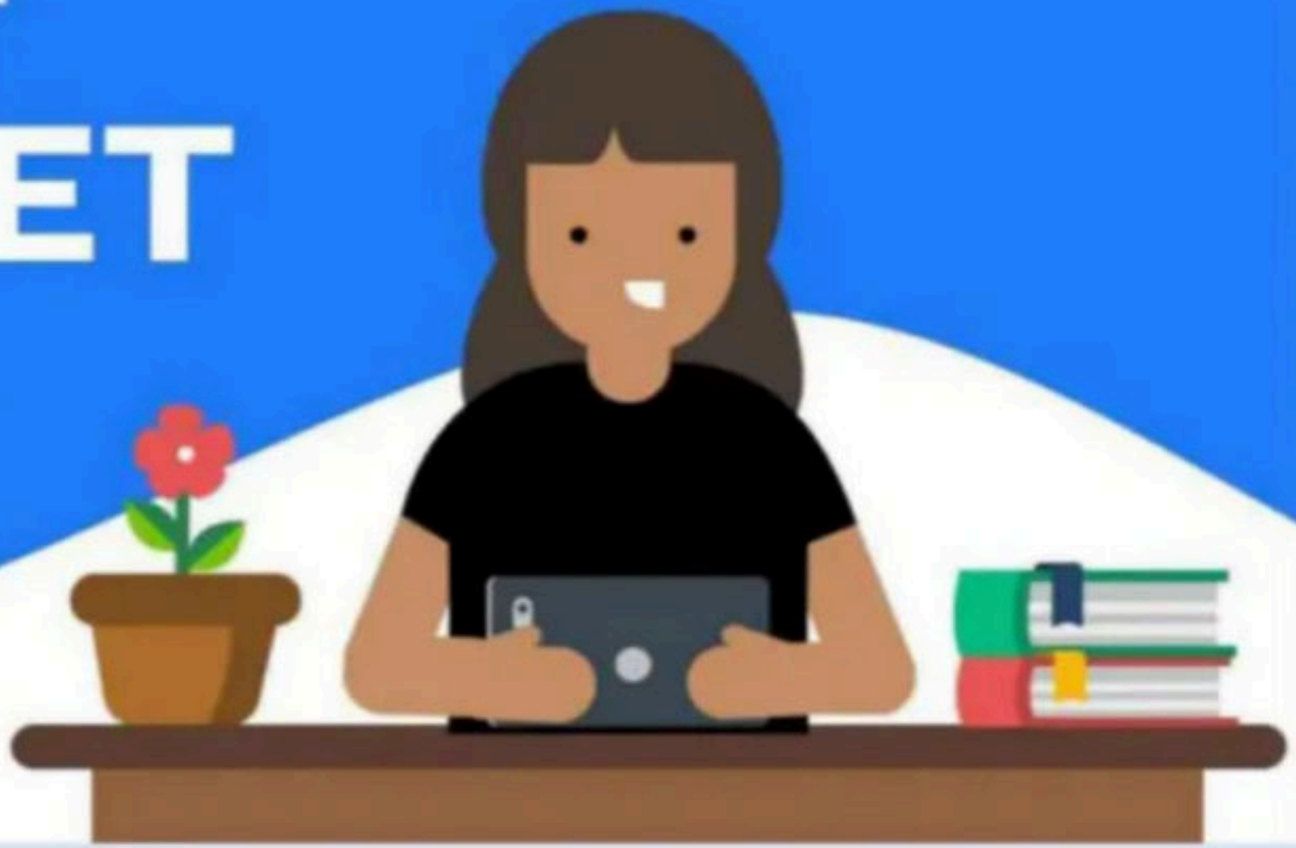

unacademy
I don't care who
is doing better
than me.
FB MOTIVATIONALQUOTES
I am doing better
than I was
last year.
It's me vs me.
~unknown

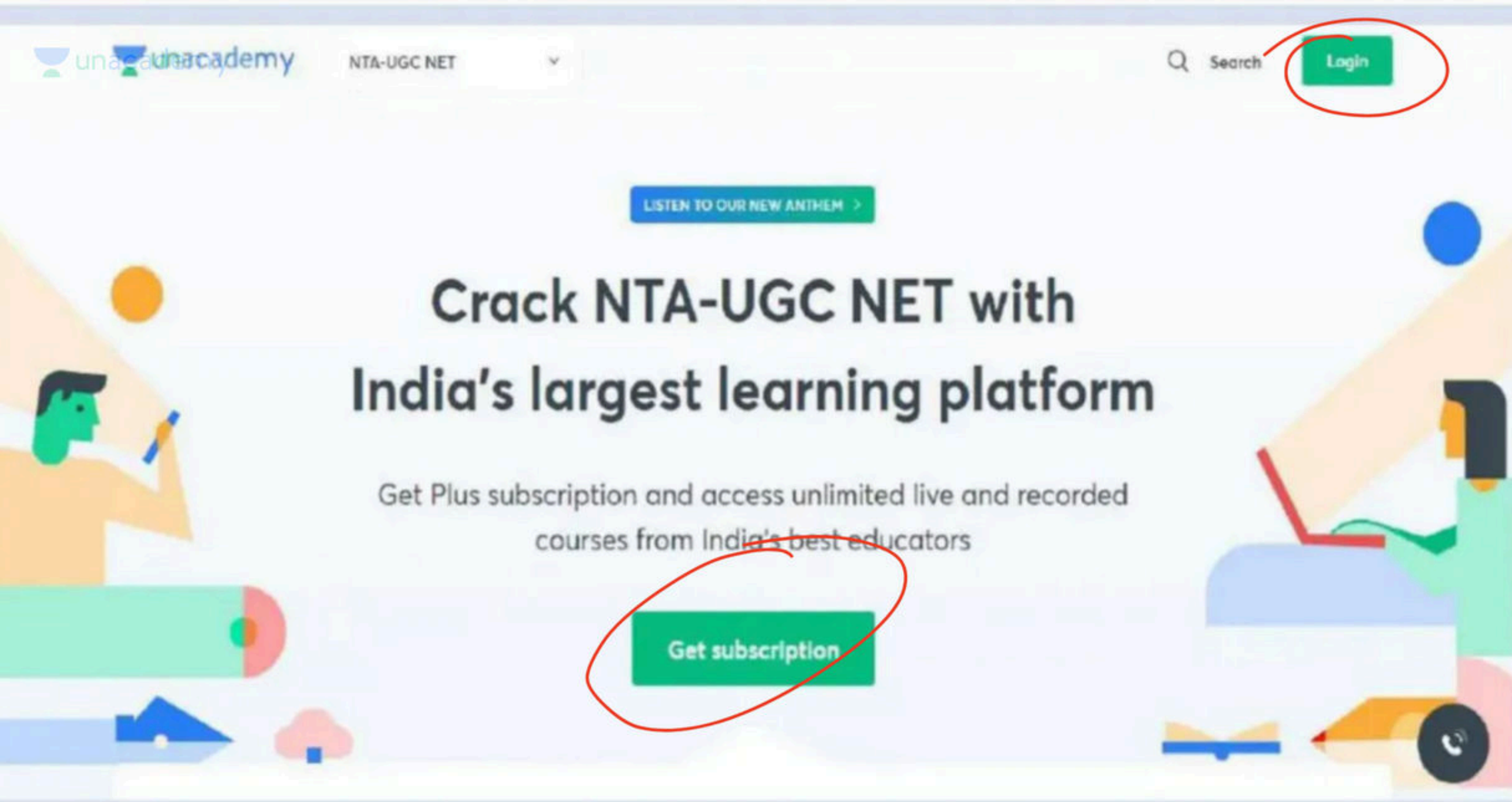
unacademy

unacademy

Perfect Study Partner For NTA UGC NET

New Batches Every Wednesday




unacademy
NTA-UGC NET
Search
Login
LISTEN TO OUR NEW ANTHEM >
Crack NTA-UGC NET with
India's largest learning platform
Get Plus subscription and access unlimited live and recorded
courses from India's best educators
Get subscription

unacademy

unacademy

CRACK NTA UGC NET WITH INDIA'S TOP EDUCATORS IN 21 SUBJECTS

- PAPER1
- COMMERCE
- ENGLISH
- HISTORY
- HINDI
- EDUCATION
- GEOGRAPHY
- POLITICAL SCIENCE
- COMPUTER SCIENCE
- ENVIRONMENTAL SCIENCE
- HOME SCIENCE
- ELECTRONIC SCIENCE
- LABOUR LAW
- PUBLIC ADMINISTRATION
- ECONOMICS
- MANAGEMENT
- SOCIOLOGY
- SANSKRIT
- LAW
- PSYCHOLOGY
- PUNJABI

WHAT ARE YOU WAITING FOR?

ENROLL NOW

unacademy


Personal Guidance
Get one on one guidance from top exam experts
Study Planner
Customized study plan with bi-weekly reviews
ICONIC
PLUS
Live Classes
Quiz/Tests
Structured Courses
Unlimited Access
Test Analysis
Get one on one guidance from top exam experts
Study Material
Specialised Notes & Practice Sets
Experts' Guidelines
Study booster workshops by exam experts

प्रमुख विचार

यदि देश का हर किसान शिक्षित हो जाये तो भारतीय इतिहास के पन्नों में यह बात स्वर्ण अक्षरों से लिखी जायेगी।

-बम्बई के गवर्नर 1911 में अपने निजी पत्र में वायसराय को

उभरता हुआ मध्य वर्ग राजनीतिक रूप से पिछड़ा है तथा वह धर्म की खोज में भी इतना उत्साहित नहीं है, उसे आवश्यकता है समृद्ध सांस्कृतिक स्थायित्व की, जिससे कि वो अपनी उपेक्षा एवं उत्पीड़न को महसूस कर सके, जो उसे उपनिवेशी शासन ने दी है।

-जवाहरलाल नेहरू.

जो एक बार मृत एवं दफन हो गया, वह सभी के लिये सदैव के लिये मृत एवं दफन हो गया इसलिये हमें उसे पुर्नजीवित करने के बजाय वर्तमान परिस्थितियों के परिवर्तित करने का प्रयत्न करना चाहिए।

-महादेव गोविंद रानाडे

हिन्दुत्व में अस्पृश्यता एक काला धब्बा है। जब तक समाज में अस्पृश्यता का अस्तित्व है यह न केवल समस्त हिन्दू जाति के लिये अपितु पूरे देश के लिये शर्मनाक है। जब इस कुरीति को हिन्दू समाज जड़ से उखाड़ फेंकेगा तभी सच्चे अर्थों में सभ्य समाज बन सकेगा और तभी समूचे विश्व को समानता का उपदेश दिया जा सकेगा।

-महात्मा गांधी

मेरी अभिलाषा है कि मेरे आंगन में सभी संस्कृतियां एक साथ फले-फूलें। लेकिन मैं नहीं

unacademy

सुधार आंदोलनों को प्रेरित करने वाले कारक

भारत की भूमि पर उपनिवेशी शासन की उपस्थिति ।

भारतीय समाज में व्याप्त विभिन्न कुरीतियां यथा भेदभाव, छुआछूत, अंधविश्वास, बहुपत्नी प्रथा, मूर्तिपूजा, महिलाओं का निम्नस्तर, उच्च जातियों की एकाधिकारमूलक एवं शोषणात्मक प्रवृति इत्यादि ।

शिक्षा का प्रसार एवं विश्व ज्ञान संबंधी जागरुकता।

पाश्चात्य आधुनिक संस्कृति का प्रभाव तथा विश्व के विभिन्न स्थानों में तत्कालीन महाशक्तियों की पराजय ।

19वीं शताब्दी में लोकतंत्र एवं राष्ट्रवाद की अवधारणा का विकास।

- **सामाजिक आधार**
- मध्य वर्ग एवं पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त भारतीयों के एक नये वर्ग का उदय ।
- मौलिक आधार
- तर्कवाद की अवधारणा का विकास,
- विश्वव्यापी धार्मिक विचारधारा,
- मानववाद एवं धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा का विकास।
- **<u>समाज सुधार के प्रमुख कारक</u>**
- **महिलाओं की स्थिति में सुधार:-** ये कारक जो महिलाओं की निम्न स्थिति केलिये उत्तरदायी थे
- -पर्दा प्रथा
- बाल विवाह
- शिक्षा का अभाव
- विवाह,
- तलाक एवं सम्पत्ति के अधिकारों में असमानता
- बहुपत्नी प्रथा
- विधवा पुर्नविवाह पर प्रतिबंध
- सती प्रथा

• सुधार के प्रमुख सहयोगात्मक कारक

समाज सुधार आंदोलन,
स्वतंत्रता आंदोलन,
विभिन्न आंदोलनों में महिलाओं की सक्रिय भागेदारी एवं नेतृत्व, स्वतंत्रत भारत का संविधान ।

महिलाओं के लिये संवैधानिक प्रावधान.

- 1829 का बंगाल रेग्यूलेशन एक्ट- जिसके द्वारा सती प्रथा अवैध घोषित ।
- 1795 एवं 1804 के बंगाल रेग्यूलेशन एक्ट- जिसके तहत बाल हत्या को जुर्मघोषित कर दिया गया, दण्ड एवं जुर्माने का प्रावधान।
- 1856 का हिन्दू विधवा पुर्नविवाह अधिनियम ।
- 1891 का सम्मति आयु अधिनियम- जिसके तहत विवाह की उम्र में वृद्धि कीगयी।
- 1930 का शारदा एक्ट ।
- 1954 का विशेष विवाह अधिनियम ।
- 1954 का हिन्दू विवाह एवं विवाह विच्छेद अधिनियम ।
- 1956 का हिन्दू दत्तक एवं प्रबंध अधिनियम ।हिन्दुओं का गोद लेने एवं पालन भत्ता देने संबंधी अधिनियम
- 1961 का मातृत्व लाभ अधीनियम ।
- 1976 का समान पारिश्रमिक अधिनियम ।
- 1978 का बाल विवाह निषेध (संशोधित) अधिनियम ।

unacademy

- 1956 (1986 में संशोधित) का महिलाओं एवं लड़कियों का अनैतिकनिषेध अधिनियम ।
- 1961 (1986 में संशोधित) का दहेज निरोधक अधिनियम ।
- **<u>जाति आधारित शोषण के विरुद्ध संघर्षकारक, जिनके कारण जातीय कठोरता में कमी आयी</u>**
- उपनिवेशी शासन का प्रभाव ।
- सामाजिक सुधार आंदोलन ।
- राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन ।
- अस्पृश्यता के विरुद्ध गांधीजी के आंदोलन।
- दलित जातियों में शिक्षा का प्रसार तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि ।
- स्वतंत्र भारत का संविधान ।

सामाजिक-सांस्कृतिक सुधार आंदोलनों का अवलोकन :

सामाजिक-सांस्कृतिक सुधार आंदोलन एवं उसके नेता

राजा राममोहन राय एवं ब्रह्म समाज:

राजा राममोहन राय (1772-1833) को प्रायः भारतीय पुनर्जागरण का जनक औ आधुनिक भारत का निर्माता कहा जाता है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनके द्वा स्थापित ब्रह्म समाज, जो आधुनिक पाश्चात्य विचारों पर आधारित था, हिन्दू धर्म व पहला सुधार आंदोलन था।

ब्रहा समाज :

- संस्थापक - राजा राम मोहन राय (20 Aug. 1928)
- उपनामक - आधुनिक भारत का पिता
- भारतियय पत्रकारिताका पिता
- नवजागरण का अग्रदूत
- भारतीय राष्ट्रवाद का जनक
- सुधार मान्दोलनों का प्रर्वतक
- नव प्रभात का तारा
- जन्म 1772, (राधानगर) हुगली पं० बंगाल
- स्थापित प्रमुख संस्थायें → राजा राम मोहन राम द्वारा
- (1) आत्मीय सभा (1814-15) राजा राम मोहन राम द्वारा स्थापित। सभा
- (2) वेदांत सोसायटी (1816)
- हिन्दू कालेज (1817)
- घडीसाज डेविड हेयर के सहयोग सेकलकत्ता में।
- प्रेसेप्ट्स आफ जीसस नामक पुस्तक का प्रकासन 1820

unacademy

वाग्ला भाषा की पत्रिका- संवाद कौमुदी सम्पादन (1821)
यह भारत की प्रथम पत्रिका थी जिसमे सती प्रथा का विरोध हुभा
कलकत्ता यूनीटेरियन – 1821
मिरात-उल- अखबार -1822 फारसीभाषामें
वेदातें कालेज -1825
राजा राम मोहन राय - faarsi भाषा में तोहफात-उल-मुबाहदीन का प्रकाशन किया

1828 में राजा राममोहन राय ने ब्रह्म सभा की स्थापना कलकत्ता में की, जिसे बाद में 'ब्रह्म समाज' कहा गया। ब्रह्म समाज के उद्देश्य 'हिंदू धर्म' में सुधार लाना, सभी धर्मों की अच्छाइयों को अपनाना, मूर्ति पूजा का विरोध, एक ब्रह्म की पूजा का उपदेश देना आदि थे। उन्होंने एकेश्वरवाद का समर्थन कर धर्मों की आपसी एकता पर जोर दिया।

ब्रह्म समाज के सिद्धांतों और दृष्टिकोण के मुख्य आधार थे-

मानव-विवेक (तर्क शक्ति), वेद व मुख्यराजा राममोहन राय धार्मिक, दार्शनिक व सामाजिक दृष्टिकोण में इस्लाम के एकेश्वरवाद, सूफीमत के रहस्यवाद, ईसाई धर्म की आचार शास्त्रीय नीतिपरक शिक्षा और पश्चिम के आधुनिक देशों के उदारवादी-बुद्धिवादी सिद्धांतों के समर्थक थे। उपनिषद् ।

• सामाजिक क्षेत्र में राजा राममोहन राय हिंदू समाज की कुरीतियों- सती प्रथा, बहुपत्नी प्रथा, वेश्यागमन, जातिवाद, बाल विवाह आदि के घोर विरोधी थे। विधवा पुनर्विवाह का इन्होंने समर्थन किया।

• धार्मिक क्षेत्र में उन्होंने मूर्ति पूजा की आलोचना करते हुए, अपने पक्ष को वेदोक्तियों के माध्यम से सिद्ध करने का प्रयास किया। इन्होंने कर्मकांड का विरोध किया तथा धार्मिक ग्रंथों की व्याख्या के लिये पुरोहित वर्ग को अस्वीकार किया। उन्होंने यह भी कहा कि अगर धर्म सामाजिक सुधार की अनुमति नहीं देते तो उसे बदल दिया जाना चाहिये।

एकेश्वरवादी मत के प्रचार हेतु उन्होंने 1815 में 'आत्मीय सभा' का भी गठन किया। 1822 में फारसी भाषा में उन्होंने मिरात-उल- अखबार (मिरातुल अखबार) का प्रकाशन किया।

कलकत्ता यूनिटेरियन कमेटी का गठन 1823 में राजा राममोहन राय, द्वारकानाथ टैगोर और विलियम एडम द्वारा किया गया।

• [1821 में बांग्ला भाषा में 'संवाद कौमुदी' का भी प्रकाशन किया। सती-प्रथा के विरोध के लिये इन्होंने अपनी इस पत्रिका का उपयोग किया।

• राजा राममोहन राय ने डच घड़ीसाज डेविड हेयरसहयोग से1817 में कलकत्ता में 'हिंदू कॉलेज' की स्थापना की। 1825 में उन्होंने कलकत्ता में 'वेदांत कॉलेज' की स्थापना की।

नोट: उल्लेखनीय है कि राजा राममोहन राय ने 1826 के जूरी अधिनियमका घोर विरोध किया था।

unacademy

राजा राममोहन राय ने फारसी भाषा में 'तोहफत-उल-मुवाहीदीन' (एकेश्वरवादियों को उपहार) का प्रकाशन किया, जिसमें उन्होंने एकेश्वरवाद के पक्ष में विवेकपूर्ण तर्क दिये।

- मुगल बादशाह अकबर द्वितीय ने राममोहन राय को 'राजा' की उपाधि प्रदान की थी।
- राजा राममोहन राय की मृत्यु 1833 में ब्रिटेन के ब्रिस्टल में हुई।
- राजा राममोहन राय के पश्चात् देवेंद्रनाथ टैगोर ने ब्रह्म समाज को कुशल नेतृत्व प्रदान किया। 1839 में उन्होंने 'तत्त्वबोधिनी सभा' की स्थापना की। तत्त्वबोधिनी सभा ने 'तत्त्वबोधिनी पत्रिका' के माध्यम से भारत के अतीत के सुव्यवस्थित अध्ययन को प्रोत्साहित किया।
- ब्रह्म समाज की शाखाएँ संयुक्त प्रांत, पंजाब तथा मद्रास में खोली गई। ब्रह्म समाज के विचारों को लेकर 1865 में केशवचंद्र सेन व देवेंद्रनाथ टैगोर के बीच विवाद हुआ, जिसके कारण केशवचंद्र सेन मूल ब्रह्म समाज से अलग हो गए और 1866 में आदि ब्रह्म समाज की स्थापना की। यही बाद में 'भारतीय ब्रह्म समाज' कहलाया ।
- 1868 में केशव चंद्र सेन ने 'टेबरेनेकल ऑफ न्यू डिस्पेंसेशन' नामक संघ की स्थापना की। 1870 में उन्होंने हिंदू पुनरुद्धार के प्रवक्ता के रूप में इंग्लैंड की यात्रा की। वहाँ से लौटने के उपरांत उन्होंने 'इंडियन रिफॉर्म एसोसिएशन' नामक संस्था का गठन किया।

unacademy

आचार्य सेन ने स्त्रियों के उद्धार, स्त्री शिक्षा आदि सामाजिक कार्योंके लिये योगदान दिया।

- 1872 में आचार्य केशव चंद्र सेन ने सरकार को ब्रह्म विवाह अधिनियम को कानूनी दर्जा दिलवाने हेतु तैयार कर लिया। 1872 में ब्रह्म विवाह अधिनियम पास किया गया, जिसमें 14 वर्ष से कम आयु की बालिकाओं तथा 18 वर्ष से कम आयु के बालकों का विवाह वर्जित कर दिया गया।
- ब्रह्म समाज का द्वितीय विभाजन 1878 में केशव चंद्र सेन के कारण हुआ। आचार्य केशव चंद्र सेन ने ब्रह्म विवाह अधिनियम-1872 का उल्लंघन करते हुए अपनी अल्पायु पुत्री का विवाह कूचबिहार के राजा से कर दिया, जो ब्रह्म समाज के द्वितीय विघटन का कारण बना।
- 1878 में ब्रह्म समाज से अलग हुए गुट (शिवनाथ शास्त्री, आनंद मोहन बोस और द्वारकानाथ गांगुली) ने 'साधारण ब्रह्म समाज' की स्थापना की, जिनका उद्देश्य था जाति प्रथा, मूर्ति पूजा का विरोध, नारी मुक्ति आदि का समर्थन करना ।

आधुनिक भारत में हिन्दू धर्म, समाज, या राजनीति में से चाहे कोई क्षेत्र हो उसमें सुधार लाने का सूत्रपात्र राजा राममोहन राय और उनके ब्रह्म समाज ने ही किया।
एच.सी. ई. जकारिया

मुझे कहते हुए दुःख होता है कि वर्तमान समय में हिन्दुओं की जो धार्मिक व्यवस्था है वह ऐसी नहीं है कि वो हिन्दुओं के राजनीतिक हितों का पक्षपोषण कर सके। इन परिस्थितियों में हिन्दू धर्म में कुछ परिवर्तन अपेक्षित हैं, जिससे हिन्दुओं को कुछ राजनीतिक लाभ एवं सामाजिक बल मिल सके।
राजा राममोहन राय

मानव सभ्यता का आदर्श अलग-अलग रहने में नहीं, बल्कि चिंतन तथा क्रिया के सभी क्षेत्रों में व्यक्तियों और राष्ट्रों के आपसी भाई-चारे में ही है।
राजा राममोहन राय

unacademy

प्रमुख विचार

ईश्वर की सच्ची उपासना वही है, जिससे न केवल उस व्यक्ति विशेष का अपितु समस्त मानव जाति का कल्याण हो सके।

केशवचंद्र सेन

हमारी मातृभूमि के लिये दो महान धर्मों की प्रणालियों हिन्दू तथा इस्लाम का संगम ही एकमात्र आशा है।

स्वामी विवेकानंद

जब तक करोड़ों लोग भूख और अज्ञान से पीड़ित हैं, तब तक मैं उस हर व्यक्ति को देशद्रोही समझूंगा जो उनके खर्च से शिक्षित बनकर उनके प्रति तनिक भी ध्यान नहीं देता।

स्वामी विवेकानंद

मत भूलो कि दलित, गरीब, अशिक्षित, चमार, भंगी एवं पिछड़े भी उसी हाड़-मांस के बने हुए हैं, जिससे कि सभ्य समाज के उच्च वर्ग के लोग।

स्वामी विवेकानंद

हम दोनों (हिन्दू और मुसलमान) भारत की हवा पर पलते हैं। हम गंगा और यमुना का पवित्र जल पीते हैं। हम दोनों इसी भूमि की पैदावार खाकर पलते हैं।.....हम दोनों एक ही देश के हैं और एक ही राष्ट्र के हैं। देश की प्रगति और भलाई हमारी एकता और प्रेम पर निर्भर है।

सर सैय्यद अहमद खां

unacademy

प्रार्थना समाज

महाराष्ट्र में 1867 में 'प्रार्थना समाज' की स्थापना हुई। इस संगठन का उद्देश्य हिंदू धर्म तथा समाज में सुधार लाना था। इसने एक ब्रह्म की उपासना का संदेश दिया और धर्म को जातिगत रूढ़िवादिता से मुक्त करने का प्रयास किया। प्रार्थना समाज की स्थापना डॉ. आत्माराम पांडुरंग ने की। बाद में आर. जी. भंडारकर तथा महादेव गोविंद रानाडे इस संगठन में शामिल हुए। इस समाज को प्रसिद्धि दिलाने का श्रेय रानाडे को ही जाता है। प्रार्थना समाज की स्थापना के प्रेरणा स्रोत केशव चंद्र सेन थे।

unacademy

- 1867 (कुछ स्रोतों में 1870) में रानाडे ने सार्वजनिक सभा की स्थापना की। इनकी तीक्ष्ण मेधाशक्ति के कारण इन्हें 'महाराष्ट्र का सुकरात' भी कहा जाता था। उन्होंने अछूतों, दलितों व पीड़ितों की दशा सुधारने के उद्देश्य से कल्याणकारी संस्थाओं का गठन किया, जैसे- विधवा आश्रम, रात्रि पाठशालाएँ आदि।
- रानाडे के प्रयत्नों से दक्कन एजुकेशनल सोसायटी की स्थापना हुई। दक्कन एजुकेशन सोसायटी के सदस्यों में तिलक, महादेव बल्लाल नामजोशी और विष्णुशास्त्री चिपलुकर भी शामिल थे। रानाडे द्वारा महाराष्ट्र विधवा पुनर्विवाह एसोसिएशन की स्थापना की गई। महिलाओं के कल्याण के लिये 'आर्य महिला समाज' की स्थापना पंडिता रमाबाई ने की थी। रानाडे के शिष्य गोपाल कृष्ण गोखले ने 'सर्वेट्स ऑफ इंडिया सोसायटी' (1905) की स्थापना की।
- प्रार्थना समाज के सिद्धांत और विचार भी ब्रह्म समाज के अनुरूप ही थे। इसने जाति प्रथा की समाप्ति, विधवाओं के पुनर्विवाह, नारी शिक्षा को बढ़ावा, बाल-विवाह के अंत आदि के पक्ष में प्रभावपूर्ण आवाज उठाई।
- प्रार्थना समाज धार्मिक गतिविधियों की अपेक्षा सामाजिक क्षेत्र में अधिक कार्यशील रहा और पश्चिमी भारत में समाज सुधार संबंधी विभिन्न क्रियाओं का केंद्र बना
- प्रार्थना सभा ने भारत के सामाजिक और धार्मिक सुधार की एक क्रमिक प्रक्रिया को आगे बढ़ाया। साथ ही इसने अपने बाद के संगठनों, जैसे- 'आर्य समाज' और 'रामकृष्ण मिशन' के लिये एक आधार का कार्य किया। इसके अतिरिक्त इसने भारतीय समाज की बुराइयों के प्रति सुधारवादी रवैया अपनाकर और इसकी अच्छाइयों को उभारकर पश्चिमी सभ्यता के अहम को तोड़ने और भारतीय सभ्यता को पुनः उसके पुराने स्थान पर स्थापित करने में सहायता की।

unacademy

आर्य समाज•

1875 में दयानंद सरस्वती ने बंबई में आर्य समाज की स्थापना की।1877 में आर्य समाज का मुख्यालय लाहौर में स्थापित किया गया।

• आर्य समाज की स्थापना का मुख्य उद्देश्य हिंदू धर्म में व्याप्त दोषों को उजागर कर उसे दूर करना, वैदिक धर्म को पुनः शुद्ध रूप में स्थापित करना, भारत को सामाजिक, धार्मिक व राजनीतिक रूप से एक सूत्र में बांधना था।

• दयानंद सरस्वती ने 'वेदों की ओर लोटों' का नारा देते हुए, वेदों को भारत का आधार स्तंभ बताया। उनका विश्वास था कि हिंदू धर्म व वेद, जिन पर भारत का पुरातन समाज टिका है, वे शाश्वत, अपरिवर्तनशील, धर्मातीत तथा देवीय हैं।

• दयानंद ने पुराणों जैसे हिंदू धर्म ग्रंथों को प्रामाणिकता को अस्वीकार किया। वर्ण व्यवस्था के स्थान पर उन्होंने कर्म के आधार को समर्थन दिया। सामाजिक व शैक्षिक मामलों में स्त्री-पुरुष के समान अधिकारों की वकालत की।

unacademy

• आर्य सामाजियों ने छुआछूत, जातिभेद, बाल-विवाह का विरोध किया तथा कुछ शर्तों के साथ विधवा पुनर्विवाह की अनुमति व अंतर्जातीय विवाह का समर्थन किया।
• आर्य समाज द्वारा चलाया गया 'शुद्धि आंदोलन' काफी विवादास्पद रहा। इसके अंतर्गत किसी कारणवश अन्य धर्म अपनाने वाले हिंदुओं को पुनः हिंदू धर्म में वापसी के लिये प्रोत्साहित किया गया।
• 'स्वेदशी व हिंदी' का समर्थन करने वाला यह प्रथम संगठन था। इसका मानना था कि "भारत भारतीयों के लिये है।"
• दयानंद सरस्वती ने 'गो रक्षा आंदोलन' चलाया। गायों की रक्षा हेतु 'गो रक्षा समिति' की स्थापना की।दयानंद सरस्वती ऐसे प्रथम समाज सुधारक थे, जिन्होंने शूद्रों व स्त्री को वेद पढ़ने, उच्च शिक्षा प्राप्त करने, यज्ञोपवीत धारण करने के पक्ष में आंदोलन चलाया।
• 1863 में उन्होंने बाह्य आंडबरों और झूठे धर्मों का खंडन करते हुए 'पाखंड-खंडिनी पताका' लहराया। दयानंद सरस्वती के विचार उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' में वर्णित हैं।दयानंद सरस्वती ने सर्वप्रथम 'स्वराज' शब्द का प्रयोग किया तथा हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया। बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और गोपाल कृष्ण गोखले जिन्होंने हमारे राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया, आर्य समाज से प्रभावित थे। राजनीति के क्षेत्र में उनका मत था कि "बुरे से बुरा देशी राज्य अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा है"।

unacademy

- वेलेंटाइन शिरोल (चिरोल) ने इस संगठन (आर्य समाज) को 'भारतीय अशांति का जन्मदाता' कहा था।.
- दयानंद सरस्वती के सहयोगी लाला हंसराज ने 1886 में दयानंद एंग्लो-वैदिक स्कूल (लाहौर) तथा स्वामी श्रद्धानंद ने 1902 में हरिद्वार के निकट कांगड़ी नामक स्थान पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की।

यंग बंगाल आंदोलन

19वीं सदी के तृतीय दशक के अंतिम वर्षों में बंगाल केबुद्धिजीवियों के मध्य एक रेडिकल ग्रुप संगठित हुआ, जिसकेविचार अधिक क्रांतिकारी थे। इस आंदोलन को 'यंग बंगालआंदोलन' के नाम से जाना जाता है। यंग बंगाल आंदोलन के प्रवर्तक हेनरी लुइस विवियन डेरोजियो थे।

- डेरोजियो फ्राँस की क्रांति से बहुत प्रभावित थे।
- समाज सुधार के लिये डेरोसियो ने 'एकेडमिक एसोसिएशन' और 'सोसायटी फॉर द एक्वीजीशन ऑफ जनरल नॉलेज' जैसे संगठनोंकी स्थापना की।
- रोकियो ने अपने समर्थकों को सत्य के लिये जीने और भरने, सभी सद्गुणों को अपनाने और उनके अनुसार आचरण करने हेतु प्रोत्साहित किया।

यंग बंगाल आंदोलन के मुख्य मुद्दे प्रेस की स्वतंत्रता, जमींदारों के अत्याचारों से रैयतों की सुरक्षा, सरकारी उच्च सेवाओं में भारतीयों को रोजगार दिलाना आदि थे।

- डेरोजियो के मुख्य शिष्यों में रामगोपाल घोष, कृष्ण मोहन बनर्जीएवं महेशचंद्र घोष थे।
- सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने डेरोजियो के अनुयायियों को 'बंगाल में आधुनिक सभ्यता के अग्रदूत', 'हमारी जाति का पिता' कहा।
- डेरोजियो को आधुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रवादी कवि' भीकहा जाताहै।
- यंग बंगाल आंदोलन का मूल संदर्भ देशी था, लेकिन इस पर विदेशी प्रभाव से इनकार नहीं किया जा सकता। यंग बंगाल के संस्थापक डेरोजियो स्वयं फ्रांस की क्रांति के सिद्धांतों से प्रभावित थे, साथ ही बंगाल के नौजवानों पर इटली के स्वतंत्रता आंदोलन का प्रभाव था।
- डेरोजियो ने समाचार पत्रों, पुस्तिकाओं और सार्वजनिक संगठनों के माध्यम से लोगों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर जागरूक करने के राजा राममोहन राय की परंपरा का अनुसरण किया। उन्होंने सार्वजनिक आंदोलन, जैसे- प्रेस की स्वतंत्रता, विदेश में ब्रिटिश उपनिवेशों में भारतीय श्रमिकों के लिये बेहतर। स्थिति, बहुमत वाली ज्यूरी द्वारा मुकदमों की सुनवाई और भारतीयों को सरकारी सेवाओं में उच्च पद जैसे मुद्दों पर खुलकर बहस की।

रामकृष्ण मिशन

- रामकृष्ण परमहंस के शिष्य विवेकानंद द्वारा रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1897 में कलकत्ता के समीप बारानगर में की गई।
- स्वामी विवेकानंद के बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्त था।
- रामकृष्ण मिशन की शिक्षाओं, उपनिषदों एवं गीता के दर्शन,बुद्धएवं यीशु के उपदेशों को आधार बनाकर विवेकानंद ने विश्व कोमानव मूल्यों की शिक्षा दी।
- 1893 में अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित प्रथम विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानंद ने भारत का नेतृत्व किया। इस सम्मेलन में जाने से पूर्व ही नरेंद्रनाथ दत्त का नाम बदलकर महाराज खेतड़ी के सुझाव पर स्वामी विवेकानंद रख दिया गया।
- विवेकानंद ने शिकागो में संपन्न 'विश्व धर्म सम्मेलन (1893)' में सभी धर्मों की एकता के विषय में कहा। उन्होंने अध्यात्मवाद एवं भौतिकतावाद के मध्य संतुलन स्थापित कर कहा कि- “यदि पश्चिम के भौतिकतावाद एवं पूर्व के अध्यात्मवाद का सम्मिश्रण कर दिया जाए तो यह मानव जाति की भलाई का सर्वोत्तम मार्ग होगा।"
- विवेकानंद का कहना था कि "धर्म न पुस्तकों में है, न बौद्धिक विकास में और न तर्क में; तर्क, सिद्धांत, पुस्तकें और धार्मिक क्रियाएँ आदि केवल धर्म के सहायक हैं, धर्म आत्म-ज्ञान में है। "

वे जातिवाद, छुआछूत एवं विषमता को राष्ट्र की दुर्बलता का कारक मानते थे। उन्होंने युवा पीढ़ी से अपील की कि वे प्राचीन सभ्यता पर गर्व करें, अपनी संस्कृति को मानव जाति के कल्याणार्थ समर्पित करें।

- विवेकानंद ने कहा कि "जब तक करोड़ों व्यक्ति भूखे और अज्ञानी हैं तब तक मैं उस प्रत्येक व्यक्ति को देशद्रोही मानता हूँ जो उन्हीं के खर्चे पर शिक्षा ग्रहण करता है परंतु उनकी परवाह बिल्कुल नहीं करता।
- स्वामीजी को 19वीं शताब्दी के नव हिंदू जागरण का संस्थापक भी कहा जाता है। सुभाष चंद्र बोस ने स्वामी विवेकानंद को "आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन का आध्यात्मिक पिता" कहा।
- स्वामी विवेकानंद ने प्रबुद्ध भारत (अंग्रेज़ी), उद्बोधन (बंगाली) नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन किया। राजयोग, ज्ञानयोग, कर्मयोग व वेदांत फिलॉसफी उनकी प्रसिद्ध पुस्तकें हैं।विवेकानंद से प्रभावित होकर एक विदेशी महिला इनके साथ भारतआई जो सिस्टर निवेदिता (मार्गरेट नोबल) के नाम से जानी जाती थीं।नोटः रामकृष्ण परमहंस ने चिंतन, संन्यास, भक्ति के परंपरागत तरीकों से धार्मिक मुक्ति प्राप्त करने का प्रयत्न किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इन मार्गों से सर्वश्रेष्ठ मार्ग मानव सेवा है। मानव सेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है।

थियोसोफिकल सोसायटी

_थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना 1875 में न्यूयॉर्क में मैडम हेलना पेट्रोवना ब्लावात्स्की तथा कर्नल हेनरी स्टली ऑल्कॉटने की थी।

• भारत में 1882 में थियोसोफिकल सोसायटी का अड्यार (मद्रास) में अंतर्राष्ट्रीय कार्यालय खोला गया।

• 1889 में एनी बेसेंट इस सोसायटी की इंग्लैंड में सदस्या बनीं। वह 1893 में भारत आई और उन्होंने सोसायटी का कार्यभार अपने हाथ में ले लिया। भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने में इनका अद्भुत योगदान रहा।

• थियोसॉफी (ब्रह्मविद्या) हिंदू धर्म के आध्यात्मिक दर्शन, उसके धर्म सिद्धांत तथा आत्मा के पुनर्जन्म सिद्धांत का समर्थन करती है।

• थियोसोफिकल सोसायटी पुनर्जन्म व कर्म के सिद्धांत को मान्यतादेती थी। इस संस्थान ने बाल विवाह, जातिवाद का विरोध तथाविधवाओं की दशा सुधारने का प्रयास किया।

• भारत में शिक्षा के क्षेत्र में विकास के लिये एनी बेसेंट 1898 में सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना की जो 1916 में मदनमोहन मालवीय जी के प्रयासों से 'बनारस हिंदू विश्वविद्यालय' बना।एनी बेसेंट ने आयरलैंड की होमरूल के नमूने पर भारत में होमरूल लीग आंदोलन का नेतृत्व किया और 1917 में कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष बनीं।

किसे राष्ट्रवाद का पैगंबर माना जाता है?
1. एम के गाँधी
2.राम मोहन राय
3.रबिन्द्र नाथ टैगोर
4. दयानंद सरस्वती
5. उपरोक्त में से कोई नहीं / उपर्युक्त में से एक से अधिक

सही उत्तर राम मोहन राय है।

- राम मोहन राय को राष्ट्रवाद का पैगंबर माना जाता है।
- वह एक अथक समाज सुधारक हैं जिन्होंने भारत में प्रबोधन और उदार सुधारवादी आधुनिकीकरण युग का उद्घाटन किया।

Key Points

- राजा राम मोहन राय को भारतीय राष्ट्रवाद के जनक के रूप में जाना जाता है।उन्हें भारतीय पुनर्जागरण के पिता और भारतीय राष्ट्रवाद का पैगंबर भी माना जाता है।
- राम मोहन राय को दिल्ली के मुगल बादशाह अकबर । ने 'राजा' की उपाधि दी थी।

राजा राममोहन राय ने पहला बंगाली भाषा का साप्ताहिक अखबार और भारतीय भाषा का पहला

- राय ने हिंदू एकेश्वरवाद की शिक्षाओं का प्रसार करने के लिए वेदांत कॉलेज की स्थापना की।अखबार शुरू किया।गोपाल कृष्ण गोखले ने राय को 'आधुनिक भारत का जनक' कहा।

unacademy

Additional Information

गांधी एक समाज सुधारक और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के नेता थे।जिन्होंने सत्याग्रह नामक अहिंसक प्रतिरोध के विचार का परिचय दिया। रवींद्रनाथ टैगोर ने मोहनदास करमचंद गांधी को "महात्मा" की उपाधि दी।महात्मा गांधी ने रवीन्द्र नाथ टैगोर को गुरुदेव की उपाधि दी।दयानंद सरस्वती आर्य समाज के संस्थापक है।

- और उन्होंने वैदिक धर्म नामक एक सुधार आंदोलन का गठन किया।वह 1876 में स्वराज "भारत भारतीयों के लिए" के रूप में नारा देने वाले पहले व्यक्ति थे।

unacademy

देवेन्द्र नाथ टैगोर द्वारा तत्वबोधिनी सभा की स्थापना कब की गई थी ?

1. 1839
2. 1845
3. 1832
4. 1854

सही उत्तर 1839 है

Key Points

तत्त्वबोधिनी सभा की स्थापना देवेन्द्रनाथ टैगोर ने की थी।

- 6 अक्टूबर, 1839 को देवेन्द्रनाथ ने तत्वरंजिनी सभा की स्थापना की जिसका नाम बदलकर'तत्वबोधिनी सभा' कर दिया गया।
- सभा का उद्देश्य वेदांत और उपनिषदों पर आधारित हिंदू धर्म के तर्कसंगत और मानवतावादी रूप को
- तत्त्वबोधिनी सभा कलकत्ता में शुरू किया गया एक समूह था बढ़ावा देना था।
- यह ब्रह्म समाज, हिंदू धर्म और भारतीय समाज के सुधारकों का एक गुट समूह है।1828 में राजा राम मोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना की।देवेन्द्रनाथ टैगोर ने एक पाठ का संकलन "ब्रह्म धर्म" के रूप में किया।

unacademy

निम्नलिखित में से 'स्वाभिमान आंदोलन' की स्थापना किसने की?

1. ई. वी. रामास्वामी या पेरियार
2. श्री नारायण गुरु
3. बी. आर. अम्बेडकर
4. स्वामी विवेकानन्द
5. उपर्युक्त में से कोई नहीं / उपर्युक्त में एक से अधिक

ई. वी. रामास्वामी या पेरियार ने स्वाभिमान आंदोलन की स्थापना की।.

Points

ई.वी. रामास्वामी नायकर, या पेरियार, जैसा कि उन्हें कहा जाता था, एक मध्यमवर्गीय परिवार से थे। वे अपने प्रारंभिक जीवन में एक तपस्वी थे और उन्होंने संस्कृत शास्त्रों का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया था।

- बाद में, वह कांग्रेस के सदस्य बन गए, केवल घृणा में छोड़ने के लिए जब उन्होंने पाया कि राष्ट्रवादियों द्वारा आयोजित एक दावत में, बैठने की व्यवस्था जाति भेद का पालन करती है यानी निचली जातियोंको उच्च जातियों से दूरी पर बैठने के लिए बनाया गया था।
- यह मानते हुए कि अछूतों को अपनी गरिमा के लिए लड़ना होगा, पेरियार ने स्वाभिमान आंदोलन कीस्थापना की। उन्होंने तर्क दिया कि अछूत एक मूल तमिल और द्रविड़ संस्कृति के सच्चे समर्थक थे, जिसे ब्राह्मणों ने .अपने अधीन कर लिया था। उन्होंने महसूस किया कि सभी धार्मिक अधिकारियों ने सामाजिक विभाजन और असमानता को ईश्वर प्रदत्त के रूप में देखा।
- अतः अछूतों को सामाजिक समानता प्राप्त करने के लिए स्वयं को सभी धर्मों से मुक्त करना पड़ा। पेरियार हिंदू धर्मग्रंथों के मुखर आलोचक थे, विशेष रूप से मनु-संहिता, प्राचीन कानूनविद, और भगवद गीता और रामायण |
- उन्होंने कहा कि इन ग्रंथों का इस्तेमाल निचली जातियों पर ब्राह्मणों के अधिकार और महिलाओं पर पुरुषों के वर्चस्व को स्थापित करने के लिए किया गया था।

Additional Information

- श्री नारायण गुरु ने 1902 में श्री नारायण धर्म परिपालन योगम या SNDP आंदोलन की स्थापना की। बी. आर. अंबेडकर ने 1927 में मंदिर प्रवेश आंदोलन शुरू किया, जिसमें उनके महार जाति केअनुयायियों ने भाग लिया। स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरु की शिक्षाओं का प्रचार करने के लिए 1897 में रामकृष्ण मिशन की

unacademy

बंगाल में सामाजिक-धार्मिक सुधारों में अग्रदूत "आत्मीय सभा" की स्थापना किसने की ?

1. विवेकानंद
2. दयानंद सरस्वती
3. राजा राम मोहन राय
4. अरबिंदो

सही उत्तर विकल्प राजा राम मोहन राय है।

Key Points

- राजा राम मोहन राय ने कोलकाता में वर्ष 1814 में बंगाल में सामाजिक-धार्मिक सुधारों में एक अग्रदूत संगठन "आत्मीय सभा" की स्थापना की।
- यह एक दार्शनिक चर्चा मंडली थी जहाँ सामाजिक सुधारों के लिए विचारों की ओर अग्रसर होने वाली बहसें और चर्चाएँ होती थीं।

unacademy

निम्नलिखित सुधारकों में से किसने "आर्य समाज" की स्थापना की?

1. राजा राम मोहन राय
2. स्वामी दयानंद सरस्वती
3. आत्माराम पांडुरंग
4. ईश्वरचंद्र विद्यासागर

सही उत्तर स्वामी दयानंद सरस्वती है।

Key Points

आर्य समाज एक एकेश्वरवादी भारतीय हिंदू सुधार आंदोलन है जो वेदों के अचूक अधिकार में विश्वास के आधार पर मूल्यों और प्रथाओं को बढ़ावा देता है।

- आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 में बॉम्बे में की थी। आर्य समाज से संबंधित 10 सिद्धांत हैं।प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय उनके शिष्य थे।
- स्वामी दयानंद सरस्वती को 'ग्रैंडफादर ऑफ़ इंडियन नेशन' के रूप में जाना जाता है।
- स्वामी दयानंद सरस्वती का मूल नाम मूल शंकर।

Additional Information

राजा राम मोहन राय

• राजा राम मोहन राय को 'भारतीय पुनर्जागरण के पिता' के रूप में जाना जाता है। उन्हें 'भारतीय राष्ट्रवाद के पैगंबर' के रूप में भी जाना जाता है। उन्होंने 1814 में आत्मीय सभा और 1828 में ब्रह्म समाज की शुरुआत की।

• उन्होंने अपनी पत्रिकाओं संबाद कौमुदी (1821) और प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस (1820) के माध्यम से सती के उन्मूलन के लिए आंदोलन चलाया।

• मुगल सम्राट अकबर द्वितीय ने राम मोहन राय को 'राजा' की उपाधि दी।

आत्माराम पांडुरंग

• प्रार्थना समाज की स्थापना 1867 में बॉम्बे में आत्माराम पांडुरंग ने की थी। • वह बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के दो भारतीय सह-संस्थापकों में से एक थे।• आत्माराम पांडुरंग ने 1879 में बॉम्बे के शेरिफ के रूप में संक्षिप्त सेवा की।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर

• ईश्वर चंद्र विद्यासागर एक भारतीय शिक्षक और समाज सुधारक थे जिन्हें 'बंगाली गद्य का जनक' मानाजाता था। ऐसे मुद्दों के प्रति ईश्वर चंद्र विद्यासागर का योगदान, विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 में पारित

unacademy

निम्नलिखित में से किसने बंगाल की रॉयल एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की ?

1. विलियम जोन्स
2. लॉर्ड कार्नवालिस
3. जॉन शोर
4. वारेन हेस्टिंग्स

सही उत्तर विलियम जोन्स है।

• सर विलियम जोन्स एक एंग्लो-वेल्श दार्शनिक थे, जो बंगाल के फोर्ट विलियम में सुप्रीम कोर्ट ऑफ़ ज्यूडिशियरी के न्यायाधीश और प्राचीन भारत के विद्वान थे। एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना 1784 में सर विलियम जोन्स ने की थी। यह एक अनूठी संस्था है जो सभी साहित्यिक और वैज्ञानिक गतिविधियों के एक फाउंटेनहेड के रूप में कार्य करती है।

• 1832 में इसका नाम बदलकर "द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल" रख दिया गया और 1936 मेंफिर से इसका नाम बदलकर "द रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल " रख दिया गया।

Key Points

• यह एशियाई अध्ययन के लिए एक केंद्र के रूप में कल्पना की गई थी जिसमें महाद्वीप की भौगोलिक सीमाओं के भीतर आदमी और प्रकृति के विषय में सब कुछ शामिल था। यह कोलकाता में स्थित है। एशियाटिक सोसाइटी के पुस्तकालय में दुनिया की सभी प्रमुख भाषाओं की लगभग 1,17,000 .पुस्तकों और 79,000 पत्रिकाओं का विशाल संग्रह है। एशियाटिक सोसाइटी के संग्रहालय की स्थापना 1814 में एन. वालिच ने की थी।

राजा राम मोहन राय ने ब्रह्मो सभा नामक एक सुधार संघ की स्थापना की जिसे बाद में..... रूप में जाना गया था।

1.देव समाज
2. आर्य समाज
3. ब्रह्मो विद्यालय
4. ब्रह्मो समाज

सही उत्तर ब्रह्मो समाज है।

Key Points

ब्रह्मो समाज की स्थापना 1828 में राजा राम मोहन राय ने की थी।

• 1828 में कलकत्ता में बंगालियों की बैठकों के बीच आंदोलन शुरू हुआ था। केशव चंद्र सेन और देवेंद्रनाथ टैगोर के बीच संघर्ष 1865 में व्यापक हो गया था जब टैगोर ने ब्रह्मोस को अपने पवित्र धागे पहनने के लिए सेवाओं का संचालन करने की अनुमति दी थी।केशव ने इस फैसले पर आपत्ति जताई और अपने अनुयायियों सहित ब्रह्मो समाज से अलग हो गए थे।उन्होंने 15 नवंबर 1866 को भारत के ब्रह्मो समाज की स्थापना की थी।जबकि दूसरी ओर टैगोर ने स्वयं को आदि ब्रह्मो समाज में संगठित कर लिया था।

Additional Information

ब्रह्मो समाज का मुख्य एजेंडा हिंदू धर्म को शुद्ध करना और एकेश्वरवाद सिखाना है।

ब्रह्मो समाज के आदर्श कारण और वेद और उपनिषद के जुड़वां स्तंभों पर निर्भर थे।

unacademy

'वेदों की ओर लौट चलो' का नारा किसने दिया था?

1. महात्मा गाँधी
2. गुरु नानक देव
3. दयानंद सरस्वती
4. भीमराव अम्बेडकर

unacademy

सही उत्तर दयानंद सरस्वती है।

Key Points

स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की। उन्होंने "वेदों की ओर लौट चलो" का नारा दिया।आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 में की थी।उन्होंने वेदों का अनुवाद किया और सत्यार्थ प्रकाश, वेद भाष्य भूमिका और वेद भाष्य नामक तीन पुस्तकें दयानंद आंग्ल वैदिक (D.A.V) स्कूल उनके दर्शन और शिक्षाओं के आधार पर स्थापित किए गए थे।

unacademy

1829 में सती प्रथा को प्रतिबंधित करवाने में किसका अहम योगदान था?

1. राजा राममोहन रॉय
2. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर
3. ज्योतिराव फुले
4. स्वामी दयानंद सरस्वती

राजा राममोहन राय ने 1829 में सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाने में योगदान दिया था।

Key Points.

सती प्रथा एक हिंदू महिला को उसके पति की चिता में उसके पति की मृत्यु पर आहुति देने की प्रथा थी। विधवा को स्वर्ग जाना था और यह एक महिला की अपने पति के प्रति समर्पण का अंतिम बलिदान और प्रमाण माना जाता था।

- बंगाल के महान हिंदू सुधारक राजा राममोहन राय ने बंगाल के हिंदू समाज में प्रचलित कई सामाजिक बुराइयों से लड़ाई लड़ी और सती प्रथा उन प्रमुखों में से एक थी।
- वह अपनी ही भाभी की आहुति के प्रत्यक्ष गवाह थे। उन्होंने 1812 में इस प्रथा के खिलाफ अपना संघर्ष शुरू किया।
- राजा राममोहन राय सती के खिलाफ एक मुखर प्रचारक थे। उन्होंने तर्क दिया कि वेदों और अन्य प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथों ने सती प्रथा को मंजूरी नहीं दी।उन्होंने अपनी पत्रिका संवाद कौमुदी में इसके निषेध की वकालत करते हुए लेख लिखे। उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी प्रशासन से इस प्रथा पर प्रतिबंध लगाने पर जोर दिया।लॉर्ड विलियम बेंटिक 1828 में भारत के गवर्नर-जनरल बने। उन्होंने सती, बहु-विवाह, बाल-विवाह और कन्या भ्रूण हत्या जैसी कई प्रचलित सामाजिक बुराइयों को दबाने में राजा राममोहन राय की मदद की।
- लॉर्ड बेंटिक ने पूरे ब्रिटिश भारत में सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाने वाला कानून पारित किया और इस अधिनियम के द्वारा सती प्रथा को 1829 में अदालतों द्वारा अवैध और दंडनीय बना दिया गया।

निम्नलिखित में से किसने अस्पृश्यता को दूर करने के लिए अपने रचनात्मक कार्यक्रम के एक भाग के रूप में हरिजन सेवक संघ को संगठित किया?

1. बीआर अम्बेडकर
2. पेरियार ईवीआर
3. नारायण गुरु
4. महात्मा गाँधी

सही उत्तर महात्मा गांधी है।

- महात्मा गांधी द्वारा 1932 में हरिजन सेवक संघ का आयोजन अस्पृश्यता को दूर करने के लिए उनके रचनात्मक कार्यक्रम के एक भाग के रूप में किया गया था।

Key Points

- महात्मा गांधी द्वारा पहले इसका मूल संगठन 30 सितंबर 1932 को स्थापित अखिल भारतीयविरोधी अस्पृश्यता लीग था।
- बाद में इसका नाम बदलकर हरिजन सेवक संघ कर दिया गया।इसके पहले अध्यक्ष घनश्याम दास बिड़ला थे और सचिव अमृतलाल ताक्कर थे। यह अभी भी एक गैर सरकारी संगठन के रूप में मौजूद है जो हरिजन या दलित लोगों के कल्याण के लिए काम कर रहा है और डिप्रेस्ड क्लास ऑफ इंडिया का उत्थान कर रहा है।

unacademy

राजा राम मोहन राय के प्रयासों से बंगाल में सती प्रथा को किस अधिनियम के तहत प्रतिबंधित किया गया था

1. विनियमन XVII AD 1829
2. विनियमन XX AD 1831
3. विनियमन XVIII AD 1856
4. विनियमन XIX AD 1829

unacademy

सती प्रथा एक हिंदू महिला को उसके पति की चिंता में उसके पति की मृत्यु पर आहुति देने की प्रथा थी।हालाँकि इस प्रथा की कोई वैदिक मान्यता नहीं है, लेकिन यह भारत के कुछ हिस्सों में प्रचलित हो गई थी। विधवा को स्वर्ग जाना था और यह एक महिला की अपने पति के प्रति समर्पण का अंतिम बलिदान औरप्रमाण माना जाता था।

- सती के कई मामले स्वैच्छिक थे जबकि कुछ को मजबूर किया गया था।

Important Points

सती प्रथा का उन्मूलन (1829):

- बंगाल के महान हिंदू सुधारक राजा राममोहन राय ने बंगाल के हिंदू समाज में प्रचलित कई सामाजिक बुराइयों से लड़ाई लड़ी और सती प्रथा प्रमुखों में से एक थी। उन्होंने अपनी ही भाभी की लॉइव हत्या देखी थी। उन्होंने 1812 में इस प्रथा के खिलाफ अपना संघर्षशुरू किया।
- एक अंग्रेज मिशनरी विलियम कैरी ने भी इस बर्बर प्रथा के खिलाफ लड़ाई लड़ी। अकेले वर्ष 1817 में लगभग 700 विधवाओं को जिंदा जला दिया गया था।भले ही अंग्रेजों ने शुरू में इसकी अनुमति दी थी, लेकिन पहली बार 1798 में कलकत्ता में इसे प्रतिबंधितकर दिया गया था। हालांकि, आसपास के क्षेत्रों में यह प्रथा जारी रही।
- राजा राममोहन राय सती (जिसे सुती भी कहते हैं) के खिलाफ एक मुखर प्रचारक थे। उन्होंने तर्क दियाकि वेदों और अन्य प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथों ने सती को मंजूरी नहीं दी। उन्होंने अपनी पत्रिका सांबद कौमुदी में इसके निषेध की वकालत करते हुए लेख लिखे। उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी प्रशासन से इस प्रथा पर प्रतिबंध लगाने पर जोर दिया। लॉर्ड विलियम बेंटिक 1828 में भारत के गवर्नर-जनरल बने। उन्होंने सती, बहुविवाह, बाल विवाह और कन्या भ्रूण हत्या जैसी कई प्रचलित सामाजिक बुराइयों को दबाने में राजा राममोहन राय कीमदद की।
- लॉर्ड बेंटिक ने ब्रिटिश भारत में कंपनी के अधिकार क्षेत्र में सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाने वाला कानून पारित किया।

बंगाल संहिता का सतीविनियमन XVII AD 1829:

- "सुत्ती की प्रथा, या हिंदुओं की विधवाओं को जिंदा जलाने या दफनाने की प्रथा, मानव स्वभाव की भावनाओं के विरुद्ध हैं, यह हिंदुओं के धर्म द्वारा अनिवार्य कर्तव्य के रूप में कहीं भी शामिल नहीं है, इसके विपरीत, पवित्रता का जीवन और विधवा की ओर से सेवानिवृत्ति अधिक विशेष रूप से और अधिमानतः निहित है, और पूरे भारत में अधिकांश लोगों द्वारा इस प्रथा को नहीं रखा जाता है, न ही मनाया जाता है: कुछ व्यापक जिलों में यह मौजूद नहीं हैं जिनमें यह किया गया है सबसे अधिक बार, यह कुख्यात है कि कई मामलों में अत्याचार के कृत्यों को अंजाम दिया गया है जो स्वयं हिंदुओं के लिए चौंकाने वाला रहा हूँ, और उनकी नजर में गैरकानूनी और दृष्ट... 12 हिंदुओं की विधवाओं को सूती या जलाने या जिंदा दफनाने की प्रथा, इसके द्वारा अवैध घोषित किया जाता है, और आपराधिक अदालतों द्वारा दंडनीय घोषित किया जाता है।'

हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856, जिसे अधिनियम XV, 1856 के रूप में भी जाना जाता है, 26 जुलाई 1856 को अधिनियमित किया गया था, जिसे लॉर्ड .द्वारा पारित किया गया था।

1. हार्डिंग
2. ऑकलैंड
3. कैनिंग
4. मेटकाल्फ

सही उत्तर कैनिंग है।

- हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 ने 16 जुलाई 1856 को हिंदू विधवाओं के पुनर्विवाह को वैध कर दिया। यह अधिनियम 26 जुलाई 1856 को अधिनियमित किया गया था।
- इस विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 के कार्यान्वयन के समय; लॉर्ड कैनिंग भारत के गवर्नर जनरल थे।
- इस अधिनियम का मसौदा लॉर्ड डलहौजी ने तैयार किया था।ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने अधिनियम की स्थापना में एक प्रमुख भूमिका निभाई।

Key Points

हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 कीमुख्य विशेषताएं:

- इस अधिनियम ने विधवाओं से विवाह करने वाले पुरुषों को कानूनी सुरक्षा प्रदान की।
- 1856 के हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम ने हिंदू विधवा के पुनर्विवाह के लिए विरासत रूपों के नुकसान के खिलाफ कानूनी सुरक्षा प्रदान की।के

कुछ- विधवा को अपने मृत पति से प्राप्त किसी भी विरासत को जब्त करने के लिए अधिकृत किया गया था।

- कानून लागू होने के बाद पहली विधवा पुनर्विवाह 7 दिसंबर 1856 को उत्तरी कलकत्ता में हुआथा।

आत्मीय सभा के संस्थापक कौन थे?

1. मोतीलाल नेहरू
2. चित्तरंजन दास
3. राजकुमार द्वारकानाथ टैगोर
4. राजा राम मोहन राय

unacademy

सही उत्तर है राजा राम मोहन राय है।

Key Points

आत्मीय सभा

- 1814 में, राजा राम मोहन राय ने आत्मीय सभा का गठन किया
  यह एक दार्शनिक चर्चा का मंच था।
  सभा का मुख्य उद्देश्य एकेश्वरवादी हिंदू वेदांतवाद पर चर्चा और बहस सत्र आयोजित करना था।1
  इसका गठन समाज में सामाजिक और धार्मिक सुधारों को शुरू करने के लिए किया गया था।
- राजा राम मोहन राय ब्रह्म समाज के संस्थापक थे।
- उन्होंने सती प्रथा को समाप्त करने में प्रमुख भूमिका निभाई।
- मुगल बादशाह अकबर द्वितीय ने उन्हें राजा की उपाधि दी थी।
- उन्हें बंगाल पुनर्जागरण का जनक माना जाता है।

Additional Information.

चित्तरंजन दासमोतीलाल नेहरू

- वह भारत के पहले प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू के पिता थे।

उन्होंने नेहरू रिपोर्ट प्रस्तुत की, भारतीयों द्वारा लिखित पहला संविधान केवल ब्रिटिश साम्राज्य केभीतर भारत के लिए प्रभुत्व की स्थिति की मांग करता था।

- उन्होंने चितरंजन दास के साथ स्वराज पार्टी की स्थापना की और वे पार्टी के सचिव थे।
- उन्हें देशबंधु के नाम से जाना जाता था।
- उन्होंने मोतीलाल नेहरू के साथ स्वराज पार्टी की स्थापना की और वे पार्टी के अध्यक्ष थे।राजकुमार द्वारकानाथ टैगोर वह ब्रिटिश पार्टनर्स के साथ एक उद्यम बनाने वाले पहले भारतीय उद्योगपति थे।
- वह रवींद्र नाथ टैगोर के दादा थे। वह टैगोर परिवार की जोरासांको शाखा के संस्थापक थे।

मुस्लिम धर्म सुधार आंदोलन

हिंदुओं के धार्मिक और सामाजिक सुधार आंदोलनों के समान ही भारतीय मुसलमानों में भी अनेक प्रकार के सुधार आंदोलन हुए। हालाँकि

मुस्लिमों में नवजागरण हिंदुओं की अपेक्षा धीरे-धीरे आया। इसका कारण यह था कि प्रारंभ में मुस्लिम आधुनिक शिक्षा से दूर रहे और अपनी पुरातनपंथी इस्लाम से जुड़े रहे। 19वीं शताब्दी के अंत में मुसलमान आधुनिक शिक्षा की तरफ मुड़े। धीरे-धीरे उनके बीच शिक्षित आधुनिक बुद्धिजीवियों का उदय हुआ।

अलीगढ़ आंदोलन

- अलीगढ़ आंदोलन का प्रवर्तन सर सैय्यद अहमद खाँ ने किया तथा इस्लाम में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों- पीरीमुरीदी प्रथा, दास प्रथा इत्यादि के विरुद्ध आवाज़ उठाई। यह अंग्रेजी शिक्षा व ब्रिटिश सरकार के साथ सहयोग के पक्ष में सबसे असरदार आंदोलन रहा।
- 1864 में कलकत्ता में सर सैय्यद अहमद खाँ द्वारा 'साइंटिफिक सोसायटी' की स्थापना की गई। इस सोसायटी ने कुछ प्रतिष्ठित अंग्रेज़ी पुस्तकों का हिंदी व उर्दू में अनुवाद करना प्रारंभ किया, जिससे मुस्लिम समाज पाश्चात्य संस्कृति व विचारों से परिचित हुआ।
- ब्रिटिश सरकार से संबंध सुधारना एवं मुसलमानों में आधुनिक शिक्षा का प्रचार करना, सर सैय्यद अहमद खाँ का मुख्य उद्देश्य था। इस दिशा में इन्होंने 1875 में 'मोहम्मडन एंग्लो ओरियंटल कॉलेज' की स्थापना अलीगढ़ में की, जो 1920 में ' अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय' में परिवर्तित हो गया।
- सर सैय्यद अहमद खाँ व बनारस के राजा शिव प्रसाद सिंह (सितारे-हिंद) ने कांग्रेस की स्थापना के विरोध में 'यूनाइटेड इंडियन पैट्रियॉटिक एसोसिएशन' की स्थापना की।
- अलीगढ़ आंदोलन में उनके सहयोगी चिराग अली, अल्ताफ हुसैनहाली, नजीर अहमद, मौलाना शिवली नोमानी आदि थे।
- सर सैय्यद अहमद की मुख्य पत्रिका तहजीब-उल-अखलाक 119 (सभ्यता और नैतिकता) थी। इनका एक महत्त्वपूर्ण कार्य 'कुरान पर टीका' लिखना भी था। इनका मानना था कि हिंदू व मुसलमान दो आँखें हैं।

• इस आंदोलन के समर्थकों की विचारधारा कुरान की उदार व्याख्या पर आधारित थी। इन्होंने मुस्लिम समाज में आधुनिक एवं उदार संस्कृति को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया।

• अलीगढ़ आंदोलन का उद्देश्य इस्लामी समाज का आधुनिकीकरण करना था। इस प्रकार अलीगढ़ आंदोलन तत्कालीन समय में मुस्लिम सांस्कृतिक एवं धार्मिक गतिविधियों का केंद्र बन गया।

unacademy

अहमदिया आंदोलन

- अहमदिया आंदोलन 19वीं शताब्दी में मिर्जा गुलाम अहमद द्वारा प्रारंभ किया गया। इसकी शुरुआत पंजाब के गुरुदासपुर जिले में 'कादियान ' नामक स्थान से की गई, इसीलिये इसे कादियानी आंदोलन) भी कहा जाता है।
- इस आंदोलन ने जिहाद का विरोध किया। गुलाम अहमद पश्चिमी उदारवाद, ब्रह्म विद्या तथा हिंदुओं के धार्मिक सुधार आंदोलन से प्रभावित थे।
- गुलाम अहमद ने अपनी पुस्तक 'बहरीन-ए-अहमदिया' में अहमदियाआंदोलन के सिद्धांतों की व्याख्या की।
- गुलाम अहमद ने स्वयं को मुहम्मद साहब के बाद 'एक और पैगंबर'व 'कृष्ण का अवतार' बताया।

वहाबी आंदोलन (1830-60)

- यह मूलतः मुस्लिम सुधारवादी धार्मिक आंदोलन था, जो उत्तर-पश्चिम, पूर्वी तथा मध्य भारत में सक्रिय रहा। हज़रत मुहम्मद साहब के इस्लाम को पुनर्स्थापित करना इसका मुख्य उद्देश्य था ।
- भारत में इस आंदोलन को लोकप्रियता सैय्यद अहमद राय बरेलवी के कारण मिली जो अरब के अब्दुल वहाब व दिल्ली के संत शाह वली - उल्लाह से प्रभावित थे।
- चूँकि इसका उद्देश्य देश को 'दार-उल-हर्ब' (काफिरों का देश) से 'दार-उल-इस्लाम' में बदलना था इसलिये प्रारंभ में पंजाब में सिखों के विरुद्ध जिहाद की घोषणा की गई, बाद में अंग्रेजों द्वारा सिख राज्य को समाप्त करने पर आंदोलन अंग्रेज़ विरोधी हो गया।
- पटना इस आंदोलन का मुख्य शक्ति केंद्र था। वहाबी आंदोलन अपनी सांप्रदायिक छवि के कारण कभी भी राष्ट्रीय आंदोलन का स्वरूप धारण नहीं कर सका।

देवबंद आंदोलन

- मुहम्मद कासिम ननौतवी तथा रशीद अहमद गंगोही ने 1866 में देवबंद (सहारनपुर, उ.प्र.) में इस्लामी मदरसे की स्थापना की।
- यह एक पुनरुद्धार आंदोलन था, जिसके दो मुख्य उद्देश्य थे- मुसलमानों में कुरान तथा हदीस की शुद्ध शिक्षा का प्रसार करना व विदेशी शासकों के विरुद्ध जिहाद की भावना को जीवित रखना।
- देवबंद आंदोलन, अलीगढ़ आंदोलन के विपरीत विचारधारा का था। देवबंद स्कूल अंग्रेज़ी शिक्षा एवं पाश्चात्य संस्कृति का पूर्ण विरोधी था। इसने अलीगढ़ आंदोलन का पुरजोर विरोध किया। इसने सर सैय्यद अहमद खाँ के 'इंडियन पैट्रियॉटिक एसोसिएशन' के विरुद्ध फतवा जारी किया था।
- महिलाओं की स्थिति को सुधारने के उद्देश्य से स्त्री शिक्षा पर बल दिया गया। परदा प्रथा समाप्त कर दी गई, विवाह की आयु बढ़ा दी गई।
- इस आंदोलन द्वारा मदरसों की स्थापना का समर्थन किया गया।
- यह सुधार आंदोलन अत्यधिक प्रभावशाली रहा और कालांतर में पारसी समुदाय भारतीय समाज आधुनिक वर्ग में परिणत हो गया। सबसे अधिक समृद्ध औरनोटः पारसी धर्म में मनुष्य के शव की अंत्येष्टि विशेष प्रकार से की जाती है। शव को खुले आसमान में काफी ऊँचाई पर (दाख्मा में) | रख दिया जाता है ताकि चील-गिद्ध उसे खा जाएँ। मान्यता है ऐसा करने से पृथ्वी, जल व अग्नि की शुद्धता बनी रहती है।

पारसी धर्म सुधार आंदोलन

- पारसी धर्म की पुनः प्राचीन शुद्धता को प्राप्त करने के उद्देश्य से19वीं सदी के आरंभ में मुंबई से पारसी धर्म सुधार आंदोलन शुरूकिया गया।
- 1851 में नौरोजी फरदोनजी, दादाभाई नौरोजी, एस.एस. बंगाली, आर. के. कामा के सहयोग से 'रहनुमाई मजदायस्नान सभा' गठित की गई तथा सभा के संदेश को पारसी समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से एक पत्रिका 'रास्त गोफतार' प्रकाशित की गई।
- यह आंदोलन जितना अधिक सचेत पारसी धर्म में फैली रूढ़िवादितासे था उतना ही अधिक जागरूक समाज में महिलाओं की स्थितिको लेकर भी था।

unacademy

सिख धर्म

सुधार आंदोलनअनुयायियों पर भी पड़ा।।

- इससे पूर्व में सिख धर्म में सुधार हेतु बाबा दयाल दास द्वारा 'निरंकारी **आंदोलन'** चलाया गया। बाबा राम सिंह द्वारा 'नामधारी आंदोलन' चलाया गया।
- पश्चिमी तर्कसंगत विचारों का प्रभाव सिख
- 1870 मेंअमृतसरमें सिंह सभा आंदोलन प्रारंभ हुआ।
- सिंह सभा द्वारा अमृतसर खालसा कॉलेज की स्थापना में सहायता की गई और बहुत से गुरुद्वारे व विद्यालय स्थापित किये गए। गुरुमुखी और पंजाबी साहित्य को विशेष प्रौत्साहन दिया गया। लेकिन इस दिशा में वास्तविक और अधिक प्रतिक्रियावादी गतिविधियाँ 1920 में अकाली आंदोलन के साथ प्रारंभ हुई। अकालियों का मुख्य उद्देश्य गुरुद्वारों का प्रबंधन सुधारना था। गुरुद्वारों में कार्यरत महंतों के पास अकूत मात्रा में धन और ज़मीन भक्तों से प्राप्त होती थी। महंत इस संपत्ति का प्रयोग निजी स्वार्थों की पूर्ति में करते थे।
- अकालियों के नेतृत्व में 1921 में सिख जनता ने इसका विरोध किया और महंतों के विरुद्ध अहिंसात्मक असहयोग सत्याग्रह आंदोलन प्रारंभ किया। बाध्य होकर सरकार को 1922 में सिख गुरुद्वारा अधिनियम पास करना पड़ा। इसी अधिनियम में 1925 में कुछ संशोधन किये गए।
- इस अधिनियम की सहायता और कभी-कभी सीधी कार्यवाही द्वारा गुरुद्वारों से भ्रष्ट महंतों

सामाजिक सुधार हेतु उठाए गए कदम:

बाल विवाह

भारत में बाल विवाह की समस्या प्रारंभ से रही है। आधुनिक काल में ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने इसे रोकने का साहसिक प्रयास किया। विद्यासागर तथा उनके समर्थकों के दबाव के कारण 1860 में लड़की के विवाह की न्यूनतम आयु 10 वर्ष कर दी गई, इससे कम आयु में विवाह को अपराध घोषित कर दिया गया।

ब्रिटिश सरकार ने बाल विवाह को प्रतिबंधित करने के लिये तीन अधिनियम पारित किये-

1. सिविल मैरिज एक्ट या नेटिव मैरिज एक्ट, 1872

: इस अधिनियम के द्वारा लड़कियों के विवाह की न्यूनतम आयु 14 वर्ष तथा लड़कों की 18 वर्ष कर दी गई। इस एक्ट द्वारा बहुविवाह प्रथा को समाप्त कर दिया गया।

सम्मति 'आयु अधिनियम, 1891 :

यह अधिनियम प्रसिद्ध भारतीय समाज सुधारक एवं बंबई के पारसी बहरामजी मालावारी के प्रयत्न से पारित हुआ। इसे 1891 में सम्मति आयु एक्ट काउंसिल द्वारा पारित कर दिया गया।

इस अधिनियम के द्वारा लड़कियों के विवाह की न्यूनतम आयु12 वर्ष कर दी गई। बाल गंगाधर तिलक ने इस अधिनियम का विरोध किया।

(3. बाल विवाह निरोधक अधिनियम, 1929 (शारदा एक्ट):

अजमेर निवासी एवं प्रसिद्ध शिक्षाविद् डॉ. हरविलास शारदा के प्रयत्न से बाल विवाह निषेध कानून बना। उन्हीं के नाम पर यह 'शारदा एक्ट' कहलाया।

- इस अधिनियम द्वारा विवाह की न्यूनतम आयु लड़कियों की 14 तथा लड़कों की 18 वर्ष निर्धारित की गई।
- स्वतंत्रता पश्चात् भारत सरकार द्वारा 1978 में बाल विवाह निरोधक अधिनियम संशोधित किया गया और बालक के विवाह की आयु 18 वर्ष से बढ़ाकर 21 वर्ष तथा बालिका की 14 वर्ष से बढ़ाकर 18 वर्ष निर्धारित की गई। (बाल विवाह का समर्थन करने वाले के विरुद्ध दंड का प्रावधान भी सम्मिलित है)।

ठगी प्रथा

लॉर्ड विलियम बेंटिंक ने ठगी प्रथा का उन्मूलन किया। इसके लिये उन्होंने एक अधिकारी 'कर्नल स्लीमैन' की नियुक्ति की। 1837 तक ठगों का दमन कर दिया गया।.

शिशु वध

- शिशु वध सामान्यतः राजपूतों में प्रचलित था, जो कन्याओं के जन्म लेते ही उन्हें मार देते थे।
- गवर्नर जनरल जॉनशोर के समय में 1795 में तथा वेलेजली के समय 1804 के नियम 3 से शिशु वध को साधारण हत्या के रूप में माना जाने लगा। इस प्रकार शिशु वध धीरे-धीरे समाप्त हो गया।

नरबलि प्रथा

इस प्रथा को समाप्त करने का श्रेय हॉर्डिंग प्रथम को जाता है, इसके लिये उसने कैंपबेल की

दास प्रथा•

गवर्नर जनरल लॉर्ड एलनबरो ने 1843 में भारत में दास प्रथा कोप्रतिबंधित कर दिया।

• ध्यातव्य है कि मध्यकाल मे फिरोजशाह तुगलक और अकबर नेदासों के व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिया था। नोट: [1833 के अधिनियम में निर्देश था कि दास प्रथा को समाप्तकर दिया जाए।

मध्यम वर्ग का उद्भव

• भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना और उनके द्वारा दी गई अंग्रेज़ी शिक्षा की बदौलत भारत में नई शिक्षा से लैस ब्रिटिश प्रशासन में नौकरी प्राप्त एक सर्वथा भिन्न वर्ग का भारतीय समाज में उदय हुआ जिसे मध्यम वर्ग के नाम से जाना गया। इसी मध्यम वर्ग ने अंग्रेज़ी शिक्षा के माध्यम से पाश्चात्य आधुनिक शिक्षा के आदर्शों स्वतंत्रता, समानता आदि को ग्रहण कर भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन चलाया। मध्यम वर्ग में डॉक्टर, वकील, पत्रकार, शिक्षक, वैज्ञानिक और अध्यापक शामिल थे।

~~इनके प्रयासों से भारतीय समाज की प्रतिक्रिया हुई~~ और कई प्रकार के सामाजिक सुधार लाग किये गए, यथा- सती निषेध, विधवा विवाह, शिशु हत्या पर प्रतिबंध आदि। इस वर्ग से जुड़े लोगों ने भारत को आधुनिक बनाने और भारतीयों में तर्क और विवेक का विकास करने पर जोर दिया। उन्होंने मध्यकालीन धार्मिक परंपराओं और संस्थाओं पर प्रहार किया तथा आधुनिक विचारों को ग्रहण करने पर बल दिया।

unacademy

• एक प्रकार से कहा जा सकता है कि यह मध्यम वर्ग ही था जो भारत को मध्यकाल की जड़ता से निकाल कर आधुनिकता के मार्ग पर अग्रसर किया। आरंभ में वह ब्रिटिश शासन का हिमायती था लेकिन जैसे ही उसने इस बात को रेखांकित किया कि उसके और ब्रिटिश के हित परस्पर विरोधी हैं, वैसे ही उसने राष्ट्रीय आंदोलन खड़ा कर दिया और गांधीजी के नेतृत्व में अहिंसक आंदोलन के द्वारा अंग्रेजों से स्वतंत्रता हासिल कर ली।

• मध्यवर्ग का योगदान भारत के आधुनिकीकरण में जहाँ काफी सकारात्मक रहा वहीं भारत में सांप्रदायिकता के विकास में भी यही मध्यवर्ग शामिल रहा जिसका अंतिम परिणाम स्वतंत्रता के साथ-साथ भारत के विभाजन के रूप में सामने आया। एक तरफ मध्यवर्ग जहाँ भारतीय एकता का संवाहक बना वहीं सांप्रदायिकता के प्रश्न को समुचित ढंग से सुलझा पाने में वह असफल रहा और मध्यकालीन विचारों और प्रवृत्तियों के आगे घुटने टेक दिये।

जातिगत संगठन / जातीय गतिशीलता

• भारतीय समाज जाति/उपजाति में न केवल बँटा हुआ है अपितु जाति व्यवस्था गतिहीन व्यवस्था है। जातिगत पहचान जन्म से तय होती है और उसी के साथ सामाजिक भेदभाव भी

• ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के पश्चात् जातीय व्यवस्था में थोड़े-बहुत परिवर्तन देखे गए या कह सकते हैं कि गतिहीन जाति व्यवस्था गतिशीलता आई जिसके कारण निम्नलिखित थे-

• अंग्रेजों के अधीन सेना और प्रशासन में सभी जाति के लोगोंको नौकरी करने का समान अवसर प्राप्त हुआ।

• संपत्ति के निजी स्वामित्व एवं भूमि को विक्रय की वस्तु बनाकर अंग्रेजों ने जाति-व्यवस्था को गतिशील बनाया।

* वाणिज्य-व्यवसाय के आधुनिकीकरण और यातायात के साधनों के तीव्र विकास ने भी सामाजिक गतिशीलता को आगे बढ़ाया।

• आधुनिक न्याय प्रणाली की स्थापना कर अंग्रेज़ों ने जाति-आधारित न्याय प्रणाली को समाप्त कर सबके लिये समान न्याय उपलब्ध कराया।शिक्षा व्यवस्था में सभी का अबाध प्रवेश सुनिश्चित कर नीची जाति के लोगों को उच्च जाति के बराबर सामाजिक हैसियत हासिल करने का मौका दिया।

• अंग्रेज़ी और आधुनिक शिक्षा प्राप्त भारतीयों ने भी जातिगत बंधनोंको तोड़ने और प्रगति करने के लिये विभिन्न संगठनों की स्थापनाकी और अपने लक्ष्य प्राप्ति में किंचित सफलता भी प्राप्त की।

• प्रमुख संस्थाएँ / जातिगत संगठन और आंदोलन निम्नलिखित हैं-

सत्यशोधक समाज•

ज्योतिराव गोविंदराव फुले (ज्योतिबा फुले) ने निम्न जातियों के कल्याण के लिये 1873 में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की।

• यह प्रथम भारतीय संगठन था जिसने अस्पृश्य वर्ग के लिये स्कूलखुलवाए तथा नारी शिक्षा के लिये पूना में एक कन्या विद्यालय खोला।

• ज्योतिबा फुले समाज में जाति प्रथा के पूर्ण उन्मूलन एवं सामाजिक- आर्थिक समानता के पक्षधर थे। ज्योतिबा ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं की कमज़ोर वर्गों के लोगों के हितों की अनदेखी करने के लिये आलोचना की।

• ज्योतिबा फुले ने अपनी पुस्तक 'गुलामगीरी' में निम्न जातियों को पाखंडी ब्राह्मणों एवं उनके अवसरवादी धर्म ग्रंथों से सुरक्षा दिलाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

आत्मसम्मान आंदोलन

• 1920 के दशक में वी. रामास्वामी नायकर उर्फ पेरियार ने इस आंदोलन को प्रारंभ किया। आत्मसम्मान आंदोलन में ब्राह्मणों की सर्वोच्चता को चुनौती दी गई तथा लोगों से ब्राह्मणवाद का विरोध करने के लिये आगे आने को कहा गया।

• ब्राह्मणों की सहायता के बिना विवाह, मंदिरों में जबरन प्रवेश तथा मनुस्मृति को जलाने आदि के लिये आंदोलन किये गए। पेरियार द्वारा तमिल भाषा में रामायण की रचना की जिसे 'सच्चीरामायण' कहा गया।

unacademy

डॉ. भीमराव अंबेडकर

- इनका जन्म 1891 में मध्य प्रदेश के जाति महार में हुआ था। महू जिले में एक अस्पृश्य
- 1924 में 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' का निर्माण किया, जिसका उद्देश्य अस्पृश्य लोगों की भौतिक एवं नैतिक उन्नति करना था।
- 1930 में अंबेडकर ने राष्ट्रीय राजनीति में प्रवेश किया। उन्होंने अछूतों के लिये अलग मताधिकार मांगा। उनको लंदन में हुई तीनोंगोलमेज सम्मेलनों (1930–32)अछूतों के प्रतिनिधि के रूप'बुलाया गया था।
- इन्होंने द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में निम्न जातियों के लिये पृथक् निर्वाचन प्रणाली की बात की जिसे मान लिया गया तथा ब्रिटिश प्रधानमंत्री द्वारा सांप्रदायिक निर्णय दिया गया। इससे दुखी होकर गांधीजी ने आमरण अनशन आरंभ कर दिया। अंत में 1932 में 'पूना समझौता' के साथ उपवास समाप्त किया।में1942 ऑल इंडिया डिप्रेस्ड क्लास फेडरेशन की स्थापना की।
- संविधान सभा में प्रारूप समिति के अध्यक्ष बने और बाद में बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया।

वायकोम सत्याग्रह• वायकोम सत्याग्रह एक प्रकार का गांधीवादी आंदोलन था। यह आंदोलन ब्राह्मणवाद के विरुद्ध तथा मंदिर में प्रवेश को लेकर चलाया गया था। यह एझवा वर्ग के उत्थान की बात करता था।

• 19वीं सदी के अंत तक केरल में नारायण गुरु, एन. कुमारन, टी. के. माधवन जैसे बुद्धिजीवियों ने छुआछूत के खिलाफ आवाज़ उठाई। 'श्री नारायण धर्म परिपालन योगम् संगठन' ने श्री नारायण गुरु के नेतृत्व में मंदिर में निम्न वर्ग के प्रवेश का समर्थन किया। मंदिरों में निम्न वर्ग के प्रवेश को लेकर सवर्णों के संगठन नायर सर्विस सोसायटी, नायर समाज व केरल हिंदू सभा ने आंदोलन का समर्थन किया। नंबूदरियों (उच्च ब्राह्मण) के संगठन 'योगक्षेम सभा' ने भी इस आंदोलन को समर्थन दिया।

• मार्च 1925 में गांधीजी की मध्यस्थता में त्रावणकोर की महारानी से मंदिर में प्रवेश के बारे में आंदोलनकारियों से समझौता हुआ।स्त्रियों से संबंधित प्रश्न अथवा मुद्दे

• आधुनिक काल में ब्रिटिश शासन के तहत भारतीय समाज में महिलाओंकी सामाजिक स्थिति बहुत ही निम्न थी, जिसके निम्न कारण थे-

• हिंदुओं में किसी स्त्री का एक ही विवाह संभव था।

• मुस्लिमों में बहु-पत्नी प्रथा थी। हिंदू पुरुष भी एक से अधिक विवाह कर सकता था।

• स्त्रियों में पर्दा प्रथा अनिवार्य थी।

• विधवाएँ पुनर्विवाह नहीं कर सकती थीं। या तो वो पति के साथ चिता पर जलकर सती हो सकती थी या जीवन पर्यंत एकाकी जीवन जीने के लिये अभिशप्त थी।

★ मुस्लिम स्त्री को संपत्ति में अधिकार मिलता था लेकिन पुरुषों के सापेक्ष आधा ही। दूसरे तलाक के संबंध में मुस्लिम पुरुष और महिला के बीच सैद्धांतिक समानता नहीं थी।

- आधुनिक शिक्षा की पहुँच अधिकांश स्त्रियों तक नहीं थी।भारतीय नारी की उपर्युक्त स्थिति पर विचार करते हुए तमाम आधुनिक शिक्षित भारतीयों ने उनकी दशा सुधारने के लिये न केवल स्त्री शिक्षा पर बल दिया बल्कि उनके लिये संपत्ति के अधिकार की भी मांग की।

- आधुनिक भारत के प्रथम सुधाकर राजा राममोहन राय ने अपने अथक प्रयासों से 1829 में सती-निषेध कानून बनवाया। उन्होंने महिलाओं की पराश्रित स्थिति की निंदा की। उनके अनुसार स्त्रियों को विरासत और संपत्ति संबंधी अधिकार मिलने चाहिये।
- राममोहन राय ने इस प्रचलित धारणा का विरोध किया कि औरतें पुरुषों से बुद्धि में या नैतिक दृष्टि से निकृष्ट हैं। उन्होंने बहुविवाह और विधवाओं की अवनत स्थिति की भी आलोचना की।

स्त्रियों से संबंधित ब्रिटिश कानूनस्त्रियों की सामाजिक स्थिति में सुधार के लिये चलाए गए सामाजिक धार्मिक आंदोलन के फलस्वरूप ब्रिटिश सरकार ने निम्नलिखित कानून बनाकर उन्हें सख्ती से लागू किया-

सती प्रथा•

लॉर्ड विलियम बेंटिक के समय में 1829 में सती प्रथा को प्रतिबंधित कर दिया गया।

•प्रारंभ में इसे बंगाल में लागू किया गया। इस अधिनियम को पारितकराने में राजा राममोहन राय की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।विधवा पुनर्विवाह आंदोलनमहाराष्ट्र में विधवा पुनर्विवाह आंदोलन का नेतृत्व विष्णु परशुराम पंडित द्वारा किया गया। उन्होंने वर्ष 1850 में विडो रिमैरिज सोसायटी की स्थापना की थी।1856 का विधवा पुनर्विवाह अधिनियम

•1856 का विधवा पुनर्विवाह अधिनियम लॉर्ड कैनिंग के समय में1856 में पारित हुआ ।

•इसे पारित करवाने में ईश्वर चंद्र विद्यासागर की मुख्य भूमिका रही। इस अधिनियम के तहत विधवाओं के पुनर्विवाह को कानूनी मान्यता । प्रदान कर दी गई।

unacademy

राष्ट्रीय आंदोलन और महिला संगठन•

राष्ट्रीय आंदोलन ने स्त्री मुक्ति के आंदोलन को भी बल प्रदान किया। बंग-भंग विरोधी आंदोलन तथा होमरूल आंदोलन में सक्रिय भागीदारी

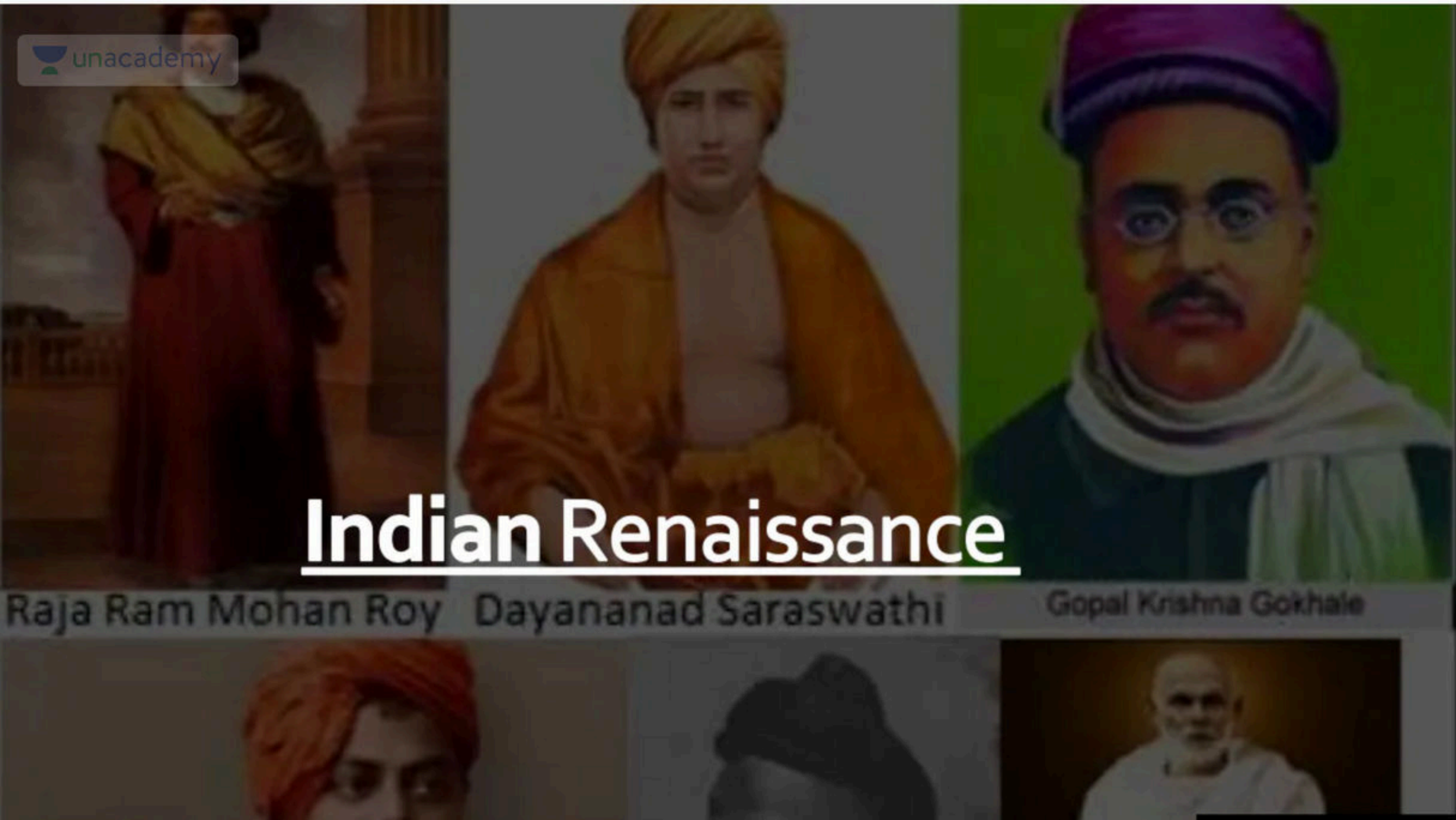
निभाकर स्त्रियाँ राजनीतिक चेतना से भी लैस हो गईं। असहयोग आंदोलन में वो जेल गई, जन प्रदर्शनों में उन्होंने लाठियाँ और गोलियाँ भी खाई।

- इसके अलावा महिलाओं ने आतंकवादी आंदोलनों में भी सक्रियभूमिका निभाई।
- स्त्रियों ने विधान मंडलों के चुनावों में न केवल वोट दिया अपितु उम्मीदवारों के रूप में भी खड़ी हुई। 1925 में कांग्रेस की अध्यक्षा के रूप में सरोजिनी नायडू का चुना जाना राष्ट्रीय आंदोलन मेंमहिलाओं की बढ़ती भागीदारी का द्योतक था।
- अनेक स्त्रियाँ 1937 में बनी लोकप्रिय प्रांतीय सरकारों में मंत्री और सचिव बनीं।
- महिलाएँ ट्रेड यूनियन और किसान आंदोलन की पहली पंक्ति में भी दिखाई देने लगीं।
- 1927 में महिलाओं ने स्वयं की उन्नति के लिये ऑल इंडिया वूमेंस कॉन्फ्रेंस की स्थापना की जो समस्त भारतीय महिलाओं का शीर्ष संगठन था।
- आधुनिक भारतीय महिलाओं से संबंधित एक पुस्तक विजय लक्ष्मीपंडित ने 'रोल ऑफ वूमेन इन दे मॉडर्न वर्ल्ड' के नाम से लिखी।

unacademy

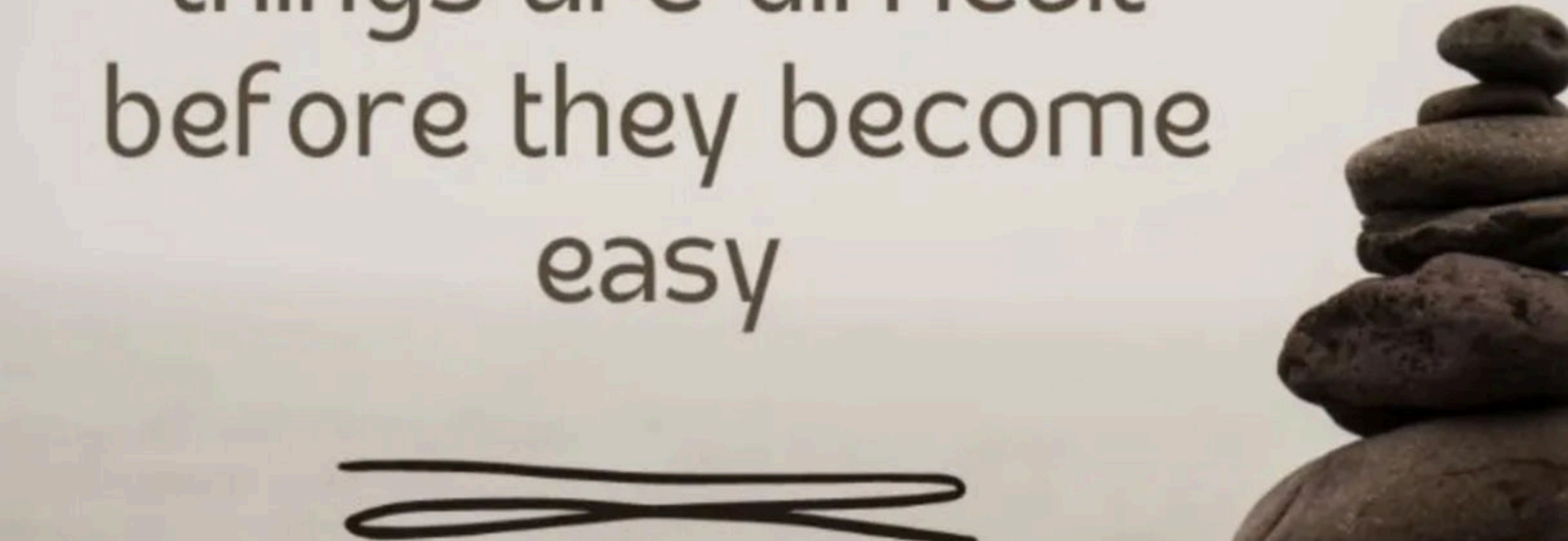
लिंग पहचान एवं संवैधानिक स्थिति

- आजादी के बाद भारतीय संविधान निर्माताओं ने स्त्री को पुरुष केबराबर अधिकार प्रदान करने के लिये संविधान में कई अनुच्छेद बनाए।
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 और 15 में स्त्री और पुरुष की पूर्ण समानता की गारंटी दी गई है।
- 1956 के उत्तराधिकार कानून ने पिता की संपत्ति में बेटी को बेटे के बराबर अधिकार दिया।
- 1955 के हिंदू विवाह कानून में कुछ विशिष्ट आधारों पर विवाहसंबंध भंग करने की व्यवस्था की गई।
- यद्यपि विवाह में दहेज लेने और देने दोनों पर प्रतिबंध है, परंतु दहेज प्रथा की बुराई अभी भी जारी है।
- राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत में स्त्री-पुरुष दोनों के लिये समान काम के लिये समान वेतन का सिद्धांत शामिल है। इसके अलावाभारतीय संविधान स्त्रियों को काम करने तथा सरकारी संस्थानों मेंनौकरी करने के समान अधिकार देता है।
- उपर्युक्त तमाम सिद्धांतों और प्रावधानों के बावजूद उन्हें व्यवहार में लागू करने में अभी भी निश्चित तौर पर अनेक स्पष्ट और अस्पष्ट बाधाएँ हैं, जिसके लिये समुचित सामाजिक वातावरण का निर्माण आवश्यक है।


unacademy
Indian Renaissance
Raja Ram Mohan Roy
Dayananad Saraswathi
Gopal Krishna Gokhale

unacademy

Have patience. All things are difficult before they become easy



unacademy

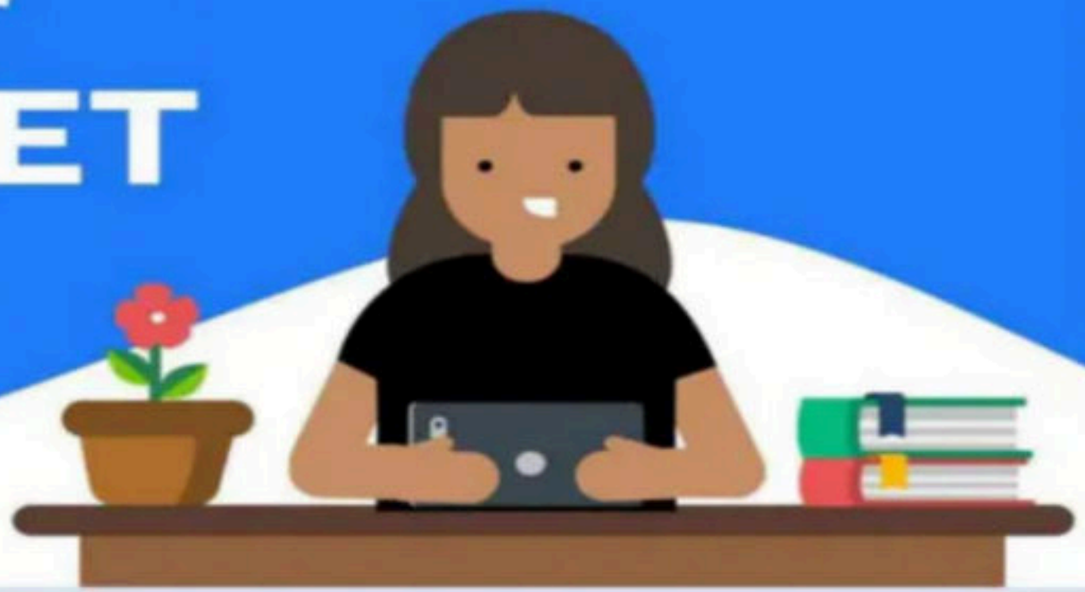
INDIAN RENAISSANCE – PRACTICE

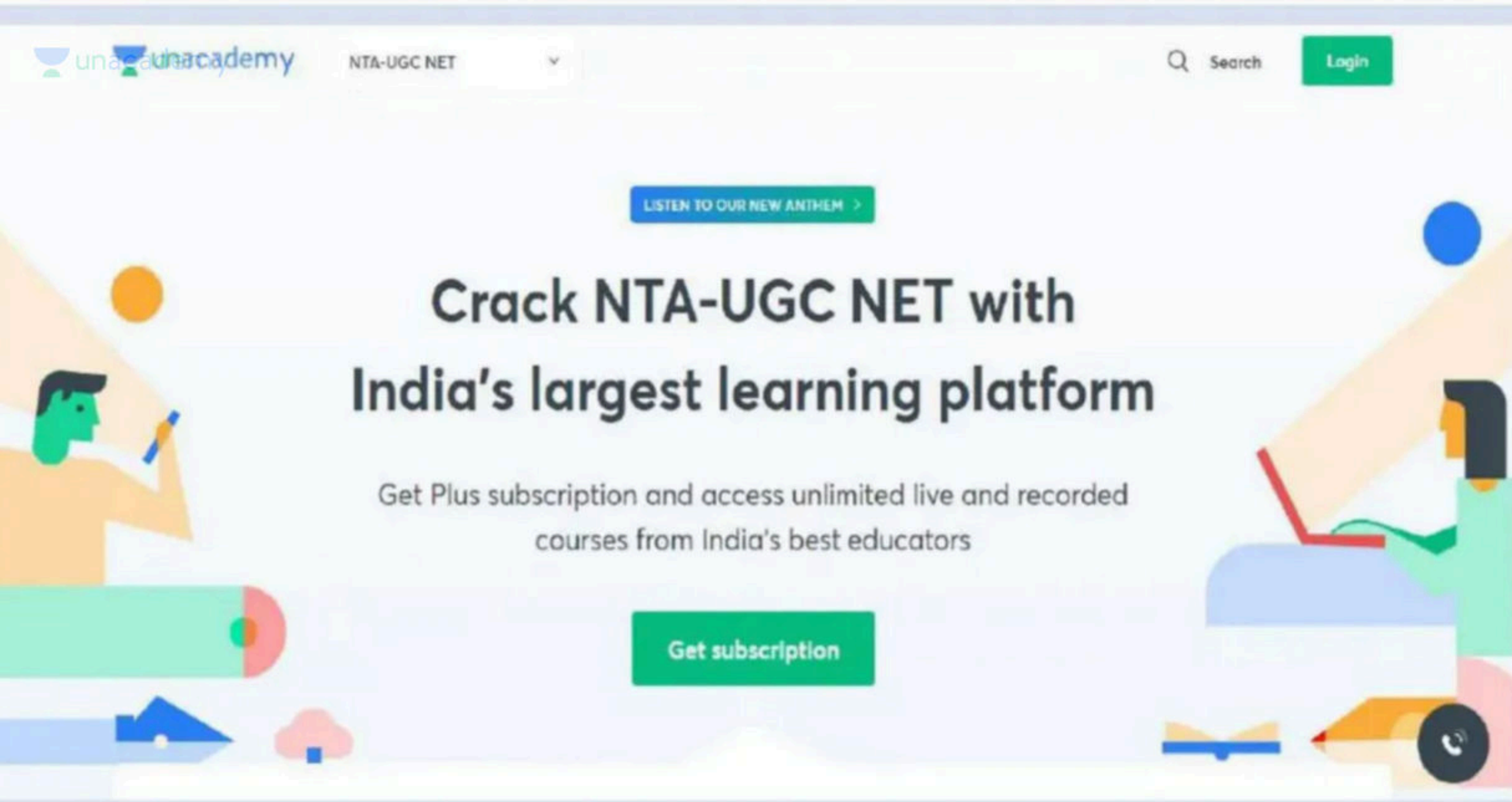
unacademy

unacademy

Perfect Study Partner For NTA UGC NET

New Batches Every Wednesday




unacademy
NTA-UGC NET
Search
Login
LISTEN TO OUR NEW ANTHEM >
Crack NTA-UGC NET with
India's largest learning platform
Get Plus subscription and access unlimited live and recorded courses from India's best educators
Get subscription

unacademy

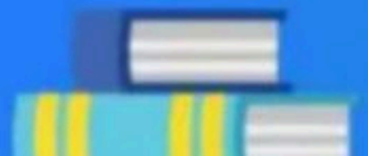
unacademy

CRACK NTA UGC NET WITH INDIA'S TOP EDUCATORS IN 21 SUBJECTS

- PAPER1
- POLITICAL SCIENCE
- ECONOMICS
- COMMERCE
- COMPUTER SCIENCE
- MANAGEMENT
- ENGLISH
- ENVIRONMENTAL SCIENCE
- SOCIOLOGY
- HISTORY
- HOME SCIENCE
- SANSKRIT
- HINDI
- ELECTRONIC SCIENCE
- LAW
- EDUCATION
- LABOUR LAW
- PSYCHOLOGY
- GEOGRAPHY
- PUBLIC ADMINISTRATION
- PUNJABI

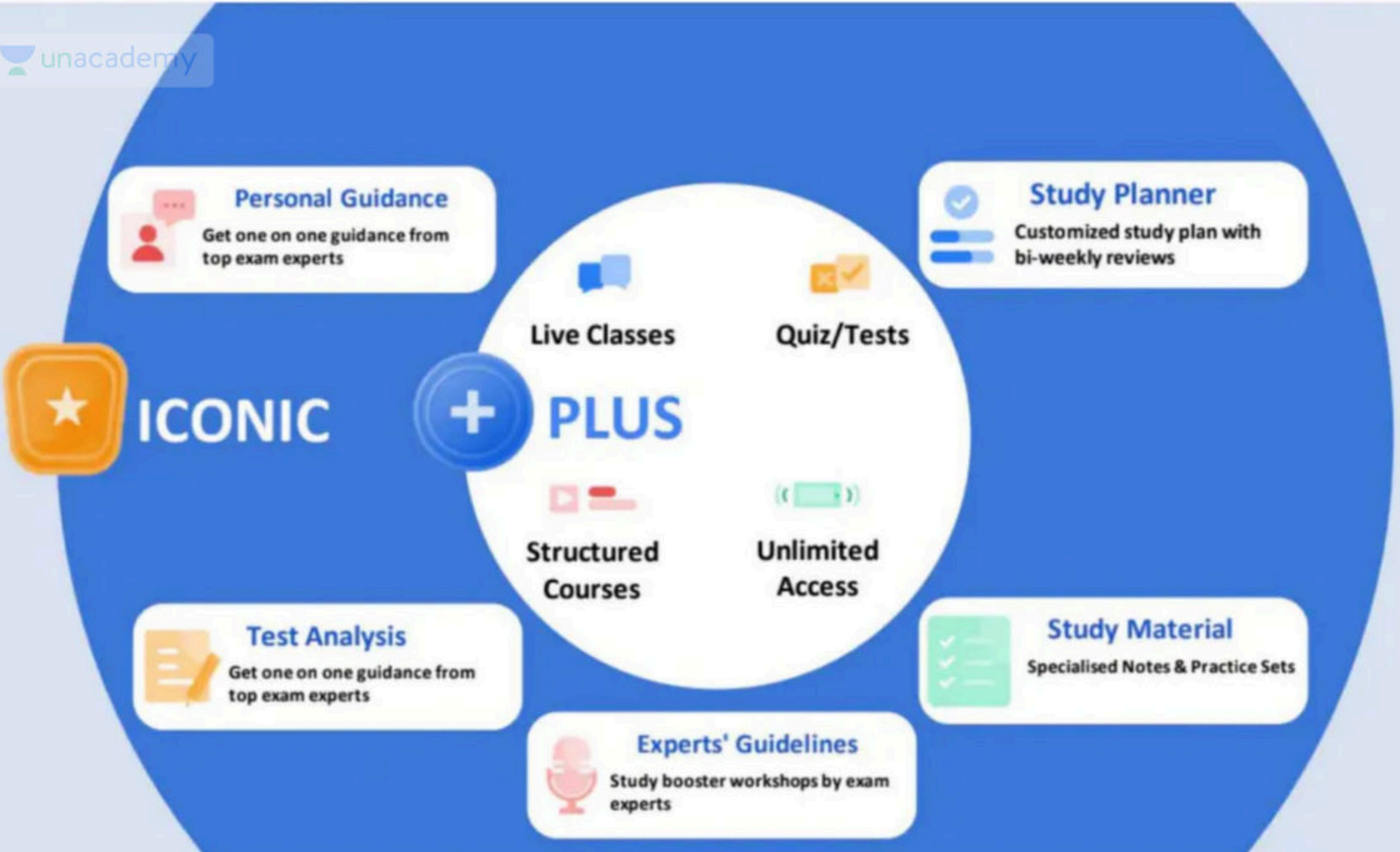
WHAT ARE YOU WAITING FOR?

ENROLL NOW





unacademy


Personal Guidance
Get one on one guidance from top exam experts
Study Planner
Customized study plan with bi-weekly reviews
ICONIC
PLUS
Live Classes
Quiz/Tests
Structured Courses
Unlimited Access
Test Analysis
Get one on one guidance from top exam experts
Study Material
Specialised Notes & Practice Sets
Experts' Guidelines
Study booster workshops by exam experts

- सामाजिक कानूनों को उसे पारित किए गए वर्षों के साथ मिलान कीजिए?
- 1.सूची-I. सूची-II
- (A) सती प्रथा का उन्मूलन. (i) 1843
- (B) विधवा पुनर्विवाह. (ii) 1804
- (C) कन्या भ्रूणहत्या निषेध. (iii) 1829-30
- (D) दास प्रथा का उन्मूलन. (iv) 1856

.	A.	B.	C.	D.
(a)	(i).	(ii).	(iii).	(iv)
(b)	(ii).	(i).	(iv).	(iii)
(c)	(iii).	(iv).	(ii).	(i)
(d)	(iii).	(iv).	(i).	(ii)

- 2. प्रसिद्ध पुस्तिका 'ब्रह्मोपासना' निम्नलिखित में किससे संबंधित थी ?
- (a) प्रार्थना समाज से
- (b) देव समाज से
- (c) आर्य समाज से
- (d) ब्रह्म समाज से

unacademy

- उत्तर- (d)प्रसिद्ध पुस्तिका 'ब्रहोपासना' ब्रह्म समाज से संबंधित थी। देवेंद्रनाथ टैगोर ने इसमें 'ब्रह्मोपासना संबंधित तथ्यों से परिचय करवाया था।

- 3. निम्नलिखित में से कौन एक 'आत्मीय सभा' से नहीं जुड़ा था?
- (a) द्वारका नाथ टैगोर
- (b) हरिहरानंद तीर्थ स्वामी
- (c) नंद किशोर बोस
- (d) केशवचंद्र सेन

- उत्तर- (d)हिंदू धर्म के एकेश्वरवादी मत का प्रचार करने के लिए 1815 ई. में राजा राममोहन राय ने अपने युवा समर्थकों के सहयोग से 'आत्मीय सभा की स्थापना की। राजा राममोहन राय द्वारा स्थापित यह प्रथम संस्था थी। आत्मीय सभा से जुड़े सदस्य थे- द्वारका नाथ टैगोर, हरिहरानंद तीर्थ स्वामी, नंद किशोर बोस, वृंदावन मिश्रा, शिव प्रसाद मिश्रा एवं प्रसन्न कुमार टैगोर, जबकि केशवचंद्र सेन ब्रह्म समाज से जुड़े थे, जिन्होंने कालांतर में ब्रह्म समाज से अलग होकर 'भारतीय ब्रह्म समाज' की स्थापना की।

- 4. निम्नलिखित में से किसने रुख्माबाई को उसकी इच्छा के विपरीत अपने पति के साथ शारीरिक संबंध दवाववश बनाने का मुद्दा महाराष्ट्र में उठाया ?
- (a) बहरामजी मलबरी
- (b) बाल गंगाधर तिलक
- (c) एन.सी. केल्कर
- (d) वी.डी. सावरकर

unacademy

- उत्तर- (a)बहरामजी मालाबारी (1853-1912) एक कवि, लेखक तथा समाज- सुधारक थे। ये पारसी समुदाय से थे। वे स्त्रियों के अधिकारों के रक्षा के प्रबल पक्षधर थे। इन्होंने ही रुख्माबाई को उसकी इच्छा के विपरीत अपने पति के साथ शारीरिक संबंध दबाववश बनाने का मुद्दा महाराष्ट्र में उठाया। इन्हीं के प्रयासों से सम्मति आयु अधिनियम पारित हुआ। 1891 ई. में यह सम्मति आयु अधिनियम कौंसिल द्वारा पारित कर दिया गया। | इस अधिनियम के द्वारा लड़कियों के विवाह की न्यूनतम आयु 12 वर्ष कर दी गई। बाल गंगाधर तिलक ने इस अधिनियम का विरोध किया था।

- 5. वहाबी सम्प्रदाय का उद्भव हुआ था-
- (a) अरब में
- (b) टर्की में.
- (c) ईरान में
- (d) इराक में

unacademy

- उत्तर- (a)वहाबी संप्रदाय का उद्भव अरब में हुआ था। इसके संस्थापक मोहम्मद इब्न अब्द अल-वहाब थे। वस्तुतः यह एक मुस्लिम सुधार आंदोलन था। | बरेली के सैय्यद अहमद भारत में इस आंदोलन के प्रवर्तक थे।

- 6. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट सेसही उत्तर चुनिए :

सूची-I.	सूची-II
A. आदि ब्रह्म समाज.	1. ज्योतिबा फुले
B. भारतीय ब्रह्म समाज...	2. देवेंद्रनाथ टैगोर
C. थियोसोफिकल सोसाइटी	3. कर्नल ऑल्काट
D. सत्य शोधक समाज.	4. केशवचंद्र सेन

- कूट:

	A	B	C	D
(a)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)
(b).	(ii)	(iv).	(iii)	(i)
(c).	(i).	(ii).	(iv).	(iii)
(d).	(iii).	(iv).	(ii)	(i)

7. ब्रिटिशकाल में कौन-सी धारा धार्मिक एवं सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध थी ?

(a) 1833 के चार्टर एक्ट की धारा 19

(b) 1833 के चार्टर एक्ट की धारा 27

(c) 1833 के चार्टर एक्ट की धारा 87

(d) 1833 के चार्टर एक्ट की धारा 67

- ब्रिटिशकाल में 1833 के चार्टर एक्ट की धारा 87 धार्मिक एवं सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध थी। इस धारा के अनुसार सरकारी सेवा में योग्यता को नियोजन का आधार माना गया तथा उम्मीदवार के धर्म, जन्मस्थान एवं जाति को नियोजन के लिए योग्य नहीं माना गया।

- 8. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म (सामाजिक-धार्मिक- आंदोलन गतिविधि स्थल) सही ढंग से मेल नहीं खाता है ?
- (a) रहनुमाई मजदायसन सभा - बॉम्बे
- (b) स्वामी नारायण आंदोलन - गुजरात
- (c) हिंदू मिशनरी सोसाइटी - संयुक्त प्रांत
- (d) मोहम्मडन साहित्यिक समाज - कलकत्ता

- 9. वर्ष 1907 में स्थापित इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरियंटल आर्ट द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्ति के प्रथम प्राप्तकर्ता कौन थे ?
- (a) अवनींद्रनाथ टैगोर
- (b) नंदलाल बोस
- (c) अमृता शेरगिल
- (d) रवींद्रनाथ टैगोर

- वर्ष 1907 में अवनींद्रनाथ टैगोर ने कलकत्ता में 'इंडियन सोसाइटीऑफ ओरियंटल आर्ट' की स्थापना की थी। उक्त संस्था द्वारा प्रदत्त| छात्रवृत्ति के प्रथम प्राप्तकर्ता नंदलाल बोस थे। उन्होंने कला की शिक्षाअवनींद्रनाथ टैगोर से ग्रहण की। नंदलाल बोस एक प्रसिद्ध भारतीयचित्रकार थे जिन्होंने संविधान की मूल प्रति का डिजाइन बनाया था।इनके प्रसिद्ध चित्रों में दांडी मार्च, संथाली कन्या, सती का देह त्यागइत्यादि शामिल हैं।

- 10. 'इंडियन सोसायटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट' की स्थापना किसके द्वाराकी गई ?
- (a) रवीन्द्रनाथ टैगोर.
- b. अवनींद्रनाथ टैगोर.
- (c) देवेंद्रनाथ टैगोर
- (d) गगनेंद्रनाथ टैगोर

- 11. 'मद्रास हिन्दू एसोसिएशन' के संस्थापक कौन थे ?
- (a) श्री अरबिंदो घोष
- (b) एनी बेसेंट
- (c) के.वी. आयंगर
- (d) टी. पी. वरियार

- 'मद्रास हिन्दू एसोसिएशन' नामक दो संस्थाएं गठित हुई हैं प्रथम 'मद्रास हिन्दू सोशल रिफॉर्मस एसोसिएशन' (मद्रास सामाजिक सुधार संघ) जिसकी स्थापना विरेशलिंगम पंतुलू ने 1892 ई. में की थी। यह एक सामाजिक शुद्धता आंदोलन था, जबकि दूसरा 'मद्रास हिंदू एसोसिएशन' (मद्रास हिन्दू संघ) जिसकी स्थापना एनी बेसेंट द्वारा, वर्ष 1904 में की गई थी।

unacademy

- 12. दक्षिणेश्वर संबंधित है-
- (a) महर्षि दयानंद से
- (b) रवींद्रनाथ टैगोर से
- (c) रामकृष्ण परमहंस से
- (d) अरबिंदो से



- उत्तर-(c)रामकृष्ण परमहंस (बचपन का नाम गदाधर) एक महान विचारक थे, जिनके विचारों को उनके शिष्य स्वामी विवेकानंद ने पूरी दुनिया में फैलाया। रामकृष्ण ने इस बात पर जोर दिया था कि ईश्वर तक पहुंचने के कई मार्ग हो सकते हैं। उन्होंने उपासना के सभी रूपों में एक ही परमात्मा की आराधना की बात कही। ज्ञातव्य है कि रामकृष्ण परमहंस (1836-86) कलकत्ता के एक मंदिर (दक्षिणेश्वर) के पुजारी थे। उनके शिष्य स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरु की स्मृति में 1897 ई. में रामकृष्ण मिशन स्थापना किया था। कालांतर में बेल्लूर मठ (कलकत्ता) और मायावती मठ (उत्तराखंड) की भी स्थापना उनके द्वारा की गई थी।

- 13. इनमें से कौन 'देवबंद स्कूल' से नहीं जुड़े थे?
- (a) शाह अब्दुल अजीज
- (b) मो. कासिम वानोतवी
- (c) रशीद अहमद गंगोही
- (d) महमूद-उल-हसन

- देवबंद स्कूल उलेमाओं ने, जो प्राचीन मुस्लिम विद्या के अग्रणी थे, यह | आंदोलन चलाया। यह एक पुनर्जागरण आंदोलन था, जिसके दो मुख्य | उद्देश्य थे-मुसलमानों में कुरान तथा हदीस की शुद्ध शिक्षा का प्रसार | करना और विदेशी शासकों के विरुद्ध 'जिहाद' की भावना को जीवित रखना। मुहम्मद कासिम ननौत्वी तथा रशीद गंगोही के नेतृत्व में देवबंद, उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में एक विद्यालय की स्थापना की। इस प्रकार मो. वानोतवी, रशीद अहमद गंगोही तथा महमूद उल-हसन 'देवबंद स्कूल' से संबंधित हैं, जबकि शाह अब्दुल अजीज देवबंद स्कूल से नहीं जुड़े थे।

- 14. संथाल विद्रोह कहां हुआ था ?
- (a) त्रिपुरा.
- (b) पुणे एवं ठाणे.
- (c) राजमहल
- (d) मैमनसिंह

- 1855-56 ई. का संथाल विद्रोह एक प्रसिद्ध आदिवासी विद्रोह था। यह विद्रोह मुख्यतः भागलपुर से राजमहल के बीच के क्षेत्र में केंद्रित था। इस विद्रोह के नेता सिद्धू, कान्हू, चांद एवं भैरव नामक चार भाई थे।

■ 15. बंगाल में 'धर्मसभा' का संस्थापक कौन था ?

■ (a) राममोहन राय.

■ (b) राधाकांत देव.

(c) देवेंद्र नाथ टैगोर

(d) केशवचंद्र सेन

- उत्तर-(b)| राधाकांत देब अनेक भाषाओं के विद्वान, हिन्दू संस्कृति के संरक्षण के पक्षधर एवं विचारक थे। बंगाल में धर्मसभा का संस्थापक राधाकांत देब थे, जिन्होंने 1830 ई. में इसकी स्थापना की। इस सभा ने सती प्रथा के समर्थन में अपना विचार रखा, जबकि राजा राममोहन राय आदि इसके उन्मूलन के पक्षधर थे।

- 16. ब्रह्म समाज के विरोध में स्थापित धर्म सभा के संस्थापक कौन थे ?
- (a) राधाकांता देब
- (b) मनमोहन घोष
- (c) राम नारायण तारकरल
- (d) मधुसूदन दत्त

17. विवेकानंद और थियोसोफिकल सोसाइटी के सुधार संबंधी विचारों में पर्याप्त साम्यता है। निम्न में से कौन-सा विचार थियोसोफिकलसोसाइटी के विचारों से मिलता है ?

(a) ये तंत्र और अधविश्वासों में विश्वास रखते थे।

(b) उन्होंने हिन्दुओं में विद्यमान हीनता की भावना को सामान्य करनेका प्रयास किया।

(c) वे मानते थे कि जिस प्रकार ईश्वर स्वतंत्र है, उसी प्रकार प्रत्येकव्यक्ति भी स्वतंत्र है

(d) उन्होंने लोगों में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान जागृत किया।

- स्वामी विवेकानंद और थियोसोफिकल सोसाइटी के सुधार संबंधी विचारों में पर्याप्त साम्यता थी और उन्होंने लोगों में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान जागृत किया। थियोसोफिकल सोसाइटी ने हिन्दू धर्म को विश्व का सर्वाधिक गूढ़ और आध्यात्मिक धर्म माना है।
- **अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य॰**
- थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना 1875 ई. में मैडम हेलन पेट्रोना ब्लावात्स्की और एच.एस. आलकाट ने अमेरिका में की थी।

> थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना का मुख्य उद्देश्य धर्म कोसमाज सेवा का मुख्य साधन बनाना तथा धार्मिक भातृभाव का प्रचार एवं प्रसार करना।
सामाजिक क्षेत्र में कार्य करते हुए इस सोसाइटी ने बाल-विवाह काविरोध किया।

- 18. निम्नलिखित में से कौन आर्य समाज से संबंधित था ?
- (a) महादेव गोविन्द रानाडे
- (b) ऐनी बेसेंट
- (c) सुरेश चन्द्र बनर्जी
- (d) पंडित गुरुदत्त

- पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी (26 अप्रैल, 1864-1890). महर्षि दयानंद सरस्वती के अनन्य शिष्य एवं कालांतर में आर्यसमाज के प्रमुख नेता थे। उनकी गिनती आर्य समाज के पांच प्रमुख नेताओं में होती है। 26 वर्ष की अल्पायु में ही उनका देहांत हो गया।

- 19. शिबली नुमानी (1914 ई. तक जीवित) देवबंद मदरसे के समर्थकों में थे। उनके संबंध में निम्न में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है ?
- (a) वे लोकतंत्रवादी होने के साथ ही साम्राज्यवाद के विरोधी थे।
- (b) वे कांग्रेस के उच्च आदर्शों के प्रशंसक थे।
- (c) वे सर सैयद अहमद खां की अंग्रेजों के प्रति भक्ति को उचितमानते थे
- (d) वे इस्लामी एकता के समर्थक थे

- शिबली नुमानी देवबन्द मदरसे के समर्थको में थे। देवबन्द आंदोलन अलीगढ़ आंदोलन के पूर्णतया विपरीत था तथा शिबली नुमानी, सर सैयद अहमद खां की अंग्रेजों के प्रति भक्ति को उचित नहीं मानते थे। इनका सर सैयद अहमद के साथ मतभेद था। सर सैयद अहमद के विपरीत इनका मानना था कि विदेशी शासकों के विरुद्ध जेहाद की भावना को जीवित रखा जाय।
- अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य
- देवबंद (सहारनपुर) में 1866 ई. में एक स्कूल खोला गया। इसमें अंग्रेजी शिक्षा तथा पाश्चात्य संस्कृति पूर्ण रूप से वर्जित थी।> देवबंद आन्दोलन ने 1885 ई. में कांग्रेस के निर्माण का स्वागत कियाथा।
- • देवबंद आंदोलन का मुख्य उद्देश्य था मुसलमानों में कुरान तथा हदीस की शुद्ध शिक्षा का प्रसार करना।

- 20. सन् 1856 के विख्यात हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम को पारित करवाने के लिए निम्नलिखित में से कौन उत्तरदायी था ?
- (a) देवेन्द्र नाथ टैगोर
- (b) केशवचंद्र सेन
- c. ईश्वर चन्द्र विद्यासागर
- (d) अक्षय कुमार दत्त

कलकत्ता के संस्कृत कालेज के आचार्य ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने विधवा | पुनर्विवाह के लिए अथक संघर्ष किया। इन्होंने यह प्रमाणित करने का | प्रयास किया कि वेदों में विधवा विवाह को मान्यता दी गई है। इनके प्रयासों के फलस्वरूप 26 जुलाई, 1856 में 'हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम' पारित हुआ।

- 21. महाराष्ट्र में प्रार्थना समाज की स्थापना की प्रेरणा किससे मिली ?
- (b) केशव चंद्र सेन
- (a) देवेंद्र नाथ टैगोर
- (c) ईश्वर चंद्र विद्यासागर
- (d) महादेव गोविंद रानाडे

- प्रार्थना समाज की स्थापना 1867 ई. में बंबई में आचार्य केशव चंद्र सेन की | प्रेरणा से आत्माराम पांडुरंग द्वारा की गई थी। महादेव गोविंद रानाडे इस संस्था से 1869 में जुड़े। इस संस्था का प्रमुख उद्देश्य जाति प्रथा का विरोध, स्त्री-पुरुष की विवाह की आयु में वृद्धि, विधवा विवाह एवं स्त्री | शिक्षा को प्रोत्साहन देना था। रानाडे का सामाजिक सुधार आंदोलन 19वीं शताब्दी के अंत तक सफलतापूर्वक जारी रहा। सामाजिक सुधार कार्यक्रमों | में उनके दो अन्य सहयोगी थे-धोंदो केशव कर्वे तथा विष्णु शास्त्री । रानाडे तथा कर्वे ने विधवा पुनर्विवाह आंदोलन का संचालन किया और विधवाओं को शिक्षा देने के लिए 'विधवा आश्रम संघ' की स्थापना की। इस आश्रम | का उद्देश्य विधवाओं को शिक्षिकाओं, परिचारिकाओं अथवा दाइयों के रूप में प्रशिक्षित करके आत्मनिर्भर बनाना था। धोंदो केशव कर्वे विधवा पुनर्विवाह संघ के सचिव थे। रानाडे का उल्लेख "पश्चिमी भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण के अग्रदूत" के रूप में किया जाता है।

- 22. बॉम्बे प्रार्थना समाज में एमजी रानाडे निम्नलिखित किससे प्रभावित हुएथे?
- (a) टेक चंद.
- (b) राजा राममोहन राय
- (C) केशव चंद्र सेन
- (d) देवेंद्र नाथ टैगोर

23. प्रार्थना समाज प्रारंभ किया गया था-

(a) आत्माराम पांडुरंग

(b) सत्यानंद अग्निहोत्री

c) ज्योतिबा फुले

(d) महात्मा गांधी

unacademy

- 25. सन् 1891 के एज ऑफ कंसेंट एक्ट के अंतर्गत कन्याओं के विवाह की न्यूनतम आयु क्या निर्धारित की गई थी?
- (a) 10 वर्ष
- (b) 12 वर्ष
- (c) 14 वर्ष
- (d) 15 वर्ष

- 1872 में एक कानून द्वारा, जिसे प्रायः नेटिव या सिविल मैरिज एक्ट कहते थे, 14 वर्ष से कम आयु की कन्याओं तथा 18 वर्ष से कम आयु के लड़कों का विवाह वर्जित कर दिया गया तथा बहुपत्नी प्रथा भी समाप्त कर दी गई, परंतु यह हिन्दू-मुस्लिम एवं अन्य मान्यता प्राप्त धर्मावलंबियों पर लागू नहीं होता था और इसका भारतीय समाज पर कोई विशेष प्रभाव नहीं हुआ ।
- एक पारसी सुधारक बी.एम. मालाबारी (B.M. Malabari) के प्रयत्नों के फलस्वरूप 1891 में सम्मति आयु अधिनियम (Age of Consent Act) पारित किया गया जिसमें 12 वर्ष से कम आयु की कन्याओं के विवाह पर प्रतिबंध लगा दिया गया। सम्मति आयु अधिनियम, 1891 का बाल गंगाधर तिलक ने विरोध किया था।

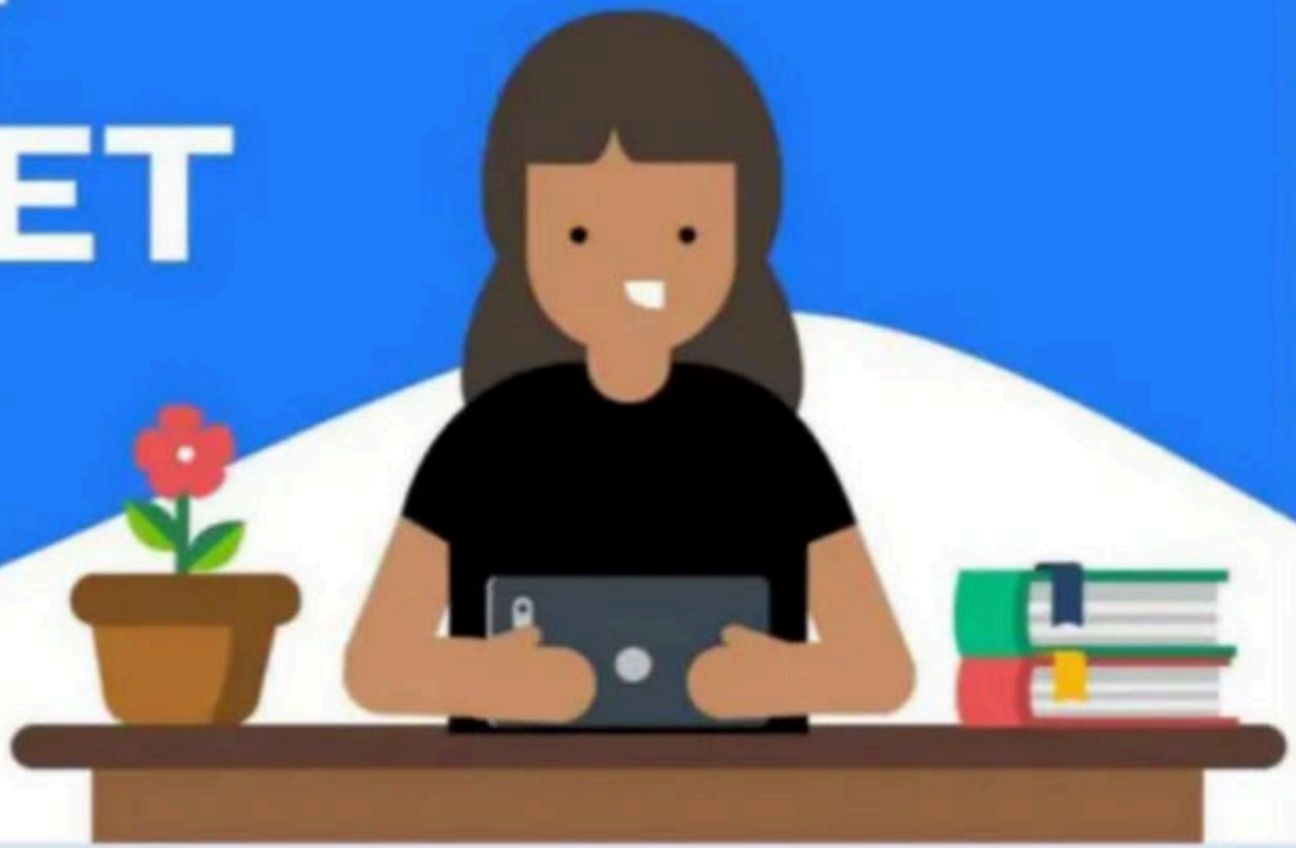
- 26. सर सैयद अहमद खां महिलाओं के लिए आधुनिक शिक्षा के विरोधी थे। निम्नलिखित में से कौन-सा दृष्टिकोण उनसे असबंद्ध था ?
- (a) महिलाएं कुशल माताएं एवं गृहणियां बने
- (b) वे महिलाओं में पर्दाप्रथा के पक्ष में थे
- (c) वे बहुविवाह को तर्कसंगत मानते थे
- (d) वे स्त्रियों को नौकरी कराने के पक्ष में थे

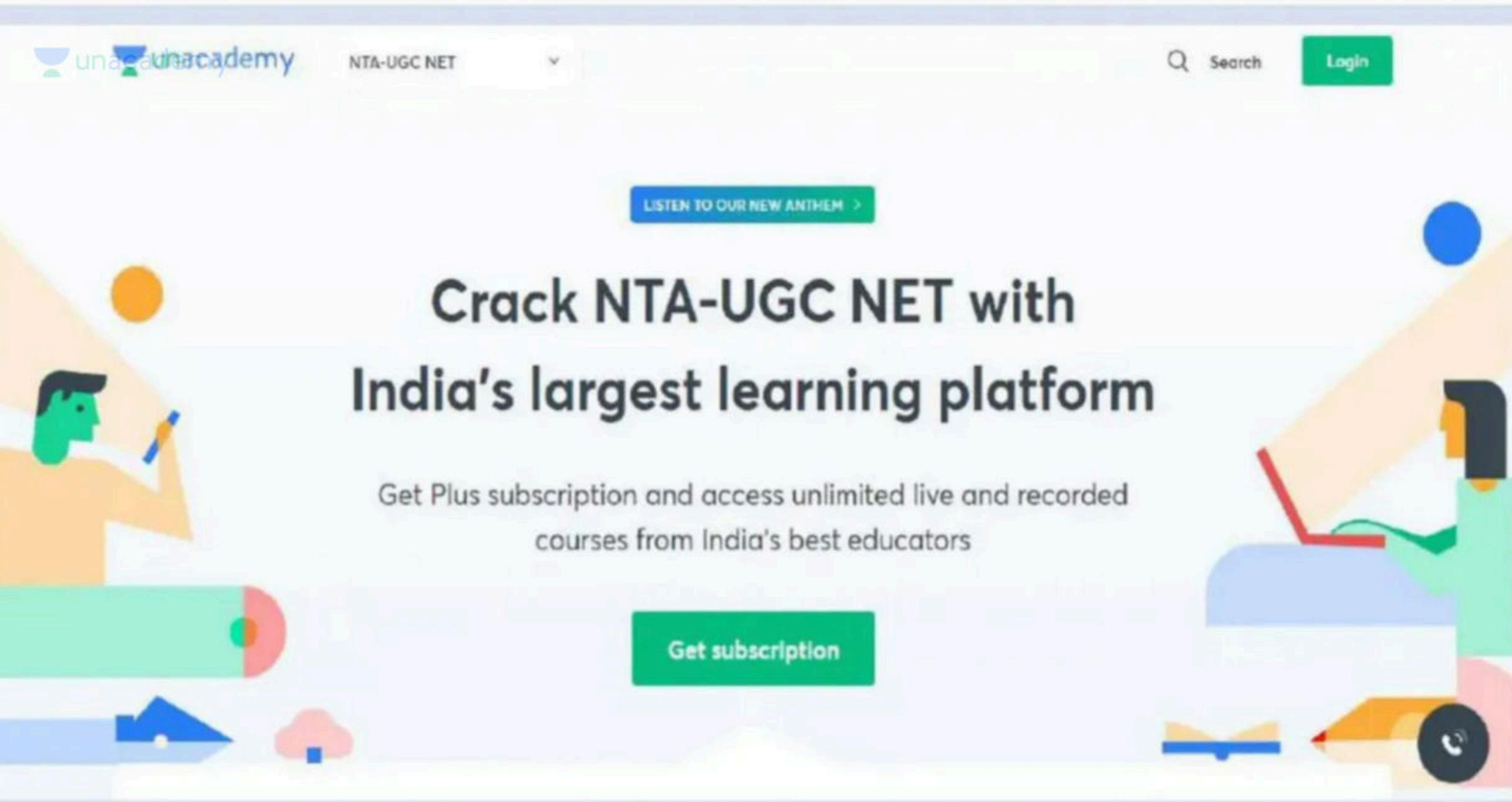
unacademy

unacademy

Perfect Study Partner For NTA UGC NET

New Batches Every Wednesday




unacademy
NTA-UGC NET
Search
Login
LISTEN TO OUR NEW ANTHEM >
Crack NTA-UGC NET with
India's largest learning platform
Get Plus subscription and access unlimited live and recorded courses from India's best educators
Get subscription

unacademy

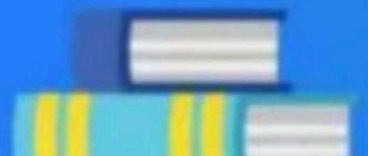
unacademy

CRACK NTA UGC NET WITH INDIA'S TOP EDUCATORS IN 21 SUBJECTS

- PAPER1
- POLITICAL SCIENCE
- ECONOMICS
- COMMERCE
- COMPUTER SCIENCE
- MANAGEMENT
- ENGLISH
- ENVIRONMENTAL SCIENCE
- SOCIOLOGY
- HISTORY
- HOME SCIENCE
- SANSKRIT
- HINDI
- ELECTRONIC SCIENCE
- LAW
- EDUCATION
- LABOUR LAW
- PSYCHOLOGY
- GEOGRAPHY
- PUBLIC ADMINISTRATION
- PUNJABI

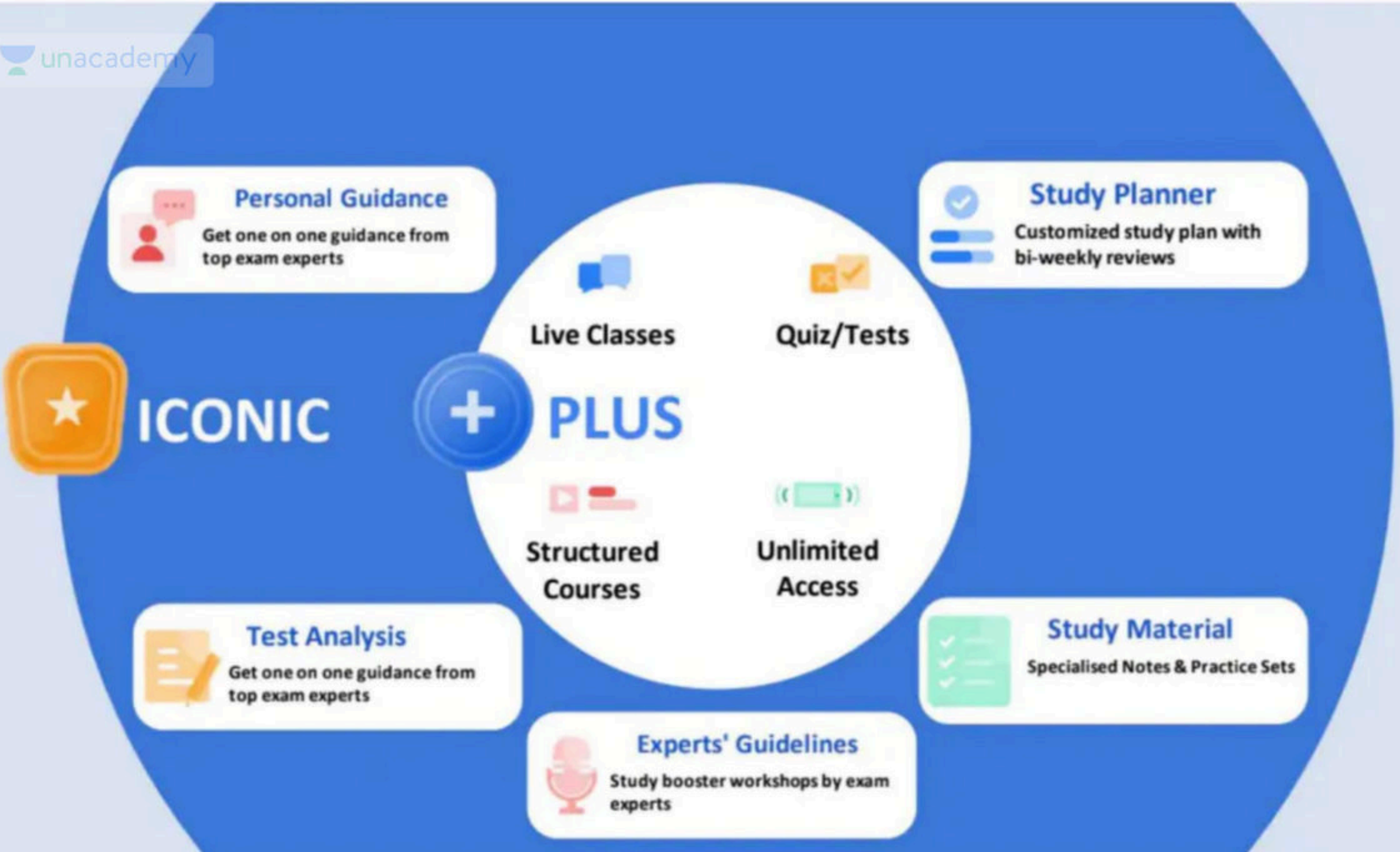
WHAT ARE YOU WAITING FOR?

ENROLL NOW





unacademy


Personal Guidance
Get one on one guidance from top exam experts
Study Planner
Customized study plan with bi-weekly reviews
ICONIC
PLUS
Live Classes
Quiz/Tests
Structured Courses
Unlimited Access
Test Analysis
Get one on one guidance from top exam experts
Study Material
Specialised Notes & Practice Sets
Experts' Guidelines
Study booster workshops by exam experts

प्रमुख विचार

यदि देश का हर किसान शिक्षित हो जाये तो भारतीय इतिहास के पन्नों में यह बात स्वर्ण अक्षरों से लिखी जायेगी।

-बम्बई के गवर्नर 1911 में अपने निजी पत्र में वायसराय को

उभरता हुआ मध्य वर्ग राजनीतिक रूप से पिछड़ा है तथा वह धर्म की खोज में भी इतना उत्साहित नहीं है, उसे आवश्यकता है समृद्ध सांस्कृतिक स्थायित्व की, जिससे कि वो अपनी उपेक्षा एवं उत्पीड़न को महसूस कर सके, जो उसे उपनिवेशी शासन ने दी है।

-जवाहरलाल नेहरू.

जो एक बार मृत एवं दफन हो गया, वह सभी के लिये सदैव के लिये मृत एवं दफन हो गया इसलिये हमें उसे पुर्नजीवित करने के बजाय वर्तमान परिस्थितियों के परिवर्तित करने का प्रयत्न करना चाहिए।

-महादेव गोविंद रानाडे

हिन्दुत्व में अस्पृश्यता एक काला धब्बा है। जब तक समाज में अस्पृश्यता का अस्तित्व है यह न केवल समस्त हिन्दू जाति के लिये अपितु पूरे देश के लिये शर्मनाक है। जब इस कुरीति को हिन्दू समाज जड़ से उखाड़ फेंकेगा तभी सच्चे अर्थों में सभ्य समाज बन सकेगा और तभी समूचे विश्व को समानता का उपदेश दिया जा सकेगा।

-महात्मा गांधी

मेरी अभिलाषा है कि मेरे आंगन में सभी संस्कृतियां एक साथ फले-फूलें। लेकिन मैं नहीं

unacademy

सुधार आंदोलनों को प्रेरित करने वाले कारक

भारत की भूमि पर उपनिवेशी शासन की उपस्थिति ।

भारतीय समाज में व्याप्त विभिन्न कुरीतियां यथा भेदभाव, छुआछूत, अंधविश्वास, बहुपत्नी प्रथा, मूर्तिपूजा, महिलाओं का निम्नस्तर, उच्च जातियों की एकाधिकारमूलक एवं शोषणात्मक प्रवृति इत्यादि ।

शिक्षा का प्रसार एवं विश्व ज्ञान संबंधी जागरुकता।

पाश्चात्य आधुनिक संस्कृति का प्रभाव तथा विश्व के विभिन्न स्थानों में तत्कालीन महाशक्तियों की पराजय ।

19वीं शताब्दी में लोकतंत्र एवं राष्ट्रवाद की अवधारणा का विकास।

- **सामाजिक आधार**
- मध्य वर्ग एवं पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त भारतीयों के एक नये वर्ग का उदय ।
- मौलिक आधार
- तर्कवाद की अवधारणा का विकास,
- विश्वव्यापी धार्मिक विचारधारा,
- मानववाद एवं धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा का विकास।
- **<u>समाज सुधार के प्रमुख कारक</u>**
- **महिलाओं की स्थिति में सुधार:-** ये कारक जो महिलाओं की निम्न स्थिति केलिये उत्तरदायी थे
- -पर्दा प्रथा
- बाल विवाह
- शिक्षा का अभाव
- विवाह,
- तलाक एवं सम्पत्ति के अधिकारों में असमानता
- बहुपत्नी प्रथा
- विधवा पुर्नविवाह पर प्रतिबंध
- सती प्रथा

• सुधार के प्रमुख सहयोगात्मक कारक

समाज सुधार आंदोलन,
स्वतंत्रता आंदोलन,
विभिन्न आंदोलनों में महिलाओं की सक्रिय भागेदारी एवं नेतृत्व, स्वतंत्रत भारत का संविधान ।

महिलाओं के लिये संवैधानिक प्रावधान.

- 1829 का बंगाल रेग्यूलेशन एक्ट- जिसके द्वारा सती प्रथा अवैध घोषित ।
- 1795 एवं 1804 के बंगाल रेग्यूलेशन एक्ट- जिसके तहत बाल हत्या को जुर्मघोषित कर दिया गया, दण्ड एवं जुर्माने का प्रावधान।
- 1856 का हिन्दू विधवा पुर्नविवाह अधिनियम ।
- 1891 का सम्मति आयु अधिनियम- जिसके तहत विवाह की उम्र में वृद्धि कीगयी।
- 1930 का शारदा एक्ट ।
- 1954 का विशेष विवाह अधिनियम ।
- 1954 का हिन्दू विवाह एवं विवाह विच्छेद अधिनियम ।
- 1956 का हिन्दू दत्तक एवं प्रबंध अधिनियम ।हिन्दुओं का गोद लेने एवं पालन भत्ता देने संबंधी अधिनियम
- 1961 का मातृत्व लाभ अधीनियम ।
- 1976 का समान पारिश्रमिक अधिनियम ।
- 1978 का बाल विवाह निषेध (संशोधित) अधिनियम ।

unacademy

- 1956 (1986 में संशोधित) का महिलाओं एवं लड़कियों का अनैतिकनिषेध अधिनियम ।
- 1961 (1986 में संशोधित) का दहेज निरोधक अधिनियम ।
- **<u>जाति आधारित शोषण के विरुद्ध संघर्षकारक, जिनके कारण जातीय कठोरता में कमी आयी</u>**
- उपनिवेशी शासन का प्रभाव ।
- सामाजिक सुधार आंदोलन ।
- राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन ।
- अस्पृश्यता के विरुद्ध गांधीजी के आंदोलन।
- दलित जातियों में शिक्षा का प्रसार तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि ।
- स्वतंत्र भारत का संविधान ।

सामाजिक-सांस्कृतिक सुधार आंदोलनों का अवलोकन :

सामाजिक-सांस्कृतिक सुधार आंदोलन एवं उसके नेता

राजा राममोहन राय एवं ब्रह्म समाज:

राजा राममोहन राय (1772-1833) को प्रायः भारतीय पुनर्जागरण का जनक औ आधुनिक भारत का निर्माता कहा जाता है। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनके द्वा स्थापित ब्रह्म समाज, जो आधुनिक पाश्चात्य विचारों पर आधारित था, हिन्दू धर्म व पहला सुधार आंदोलन था।

ब्रहा समाज :

- संस्थापक - राजा राम मोहन राय (20 Aug. 1928)
- उपनामक - आधुनिक भारत का पिता
- भारतियय पत्रकारिताका पिता
- नवजागरण का अग्रदूत
- भारतीय राष्ट्रवाद का जनक
- सुधार मान्दोलनों का प्रर्वतक
- नव प्रभात का तारा
- जन्म 1772, (राधानगर) हुगली पं० बंगाल
- स्थापित प्रमुख संस्थायें → राजा राम मोहन राम द्वारा
- (1) आत्मीय सभा (1814-15) राजा राम मोहन राम द्वारा स्थापित। सभा
- (2) वेदांत सोसायटी (1816)
- हिन्दू कालेज (1817)
- घडीसाज डेविड हेयर के सहयोग सेकलकत्ता में।
- प्रेसेप्ट्स आफ जीसस नामक पुस्तक का प्रकासन 1820

unacademy

वाग्ला भाषा की पत्रिका- संवाद कौमुदी सम्पादन (1821)
यह भारत की प्रथम पत्रिका थी जिसमे सती प्रथा का विरोध हुभा
कलकत्ता यूनीटेरियन – 1821
मिरात-उल- अखबार -1822 फारसीभाषामें
वेदातें कालेज -1825
राजा राम मोहन राय - faarsi भाषा में तोहफात-उल-मुबाहदीन का प्रकाशन किया

1828 में राजा राममोहन राय ने ब्रह्म सभा की स्थापना कलकत्ता में की, जिसे बाद में 'ब्रह्म समाज' कहा गया। ब्रह्म समाज के उद्देश्य 'हिंदू धर्म' में सुधार लाना, सभी धर्मों की अच्छाइयों को अपनाना, मूर्ति पूजा का विरोध, एक ब्रह्म की पूजा का उपदेश देना आदि थे। उन्होंने एकेश्वरवाद का समर्थन कर धर्मों की आपसी एकता पर जोर दिया।

ब्रह्म समाज के सिद्धांतों और दृष्टिकोण के मुख्य आधार थे-

मानव-विवेक (तर्क शक्ति), वेद व मुख्यराजा राममोहन राय धार्मिक, दार्शनिक व सामाजिक दृष्टिकोण में इस्लाम के एकेश्वरवाद, सूफीमत के रहस्यवाद, ईसाई धर्म की आचार शास्त्रीय नीतिपरक शिक्षा और पश्चिम के आधुनिक देशों के उदारवादी-बुद्धिवादी सिद्धांतों के समर्थक थे। उपनिषद् ।

• सामाजिक क्षेत्र में राजा राममोहन राय हिंदू समाज की कुरीतियों- सती प्रथा, बहुपत्नी प्रथा, वेश्यागमन, जातिवाद, बाल विवाह आदि के घोर विरोधी थे। विधवा पुनर्विवाह का इन्होंने समर्थन किया।

• धार्मिक क्षेत्र में उन्होंने मूर्ति पूजा की आलोचना करते हुए, अपने पक्ष को वेदोक्तियों के माध्यम से सिद्ध करने का प्रयास किया। इन्होंने कर्मकांड का विरोध किया तथा धार्मिक ग्रंथों की व्याख्या के लिये पुरोहित वर्ग को अस्वीकार किया। उन्होंने यह भी कहा कि अगर धर्म सामाजिक सुधार की अनुमति नहीं देते तो उसे बदल दिया जाना चाहिये।

एकेश्वरवादी मत के प्रचार हेतु उन्होंने 1815 में 'आत्मीय सभा' का भी गठन किया। 1822 में फारसी भाषा में उन्होंने मिरात-उल- अखबार (मिरातुल अखबार) का प्रकाशन किया।

कलकत्ता यूनिटेरियन कमेटी का गठन 1823 में राजा राममोहन राय, द्वारकानाथ टैगोर और विलियम एडम द्वारा किया गया।

• [1821 में बांग्ला भाषा में 'संवाद कौमुदी' का भी प्रकाशन किया। सती-प्रथा के विरोध के लिये इन्होंने अपनी इस पत्रिका का उपयोग किया।

• राजा राममोहन राय ने डच घड़ीसाज डेविड हेयरसहयोग से1817 में कलकत्ता में 'हिंदू कॉलेज' की स्थापना की। 1825 में उन्होंने कलकत्ता में 'वेदांत कॉलेज' की स्थापना की।

नोट: उल्लेखनीय है कि राजा राममोहन राय ने 1826 के जूरी अधिनियमका घोर विरोध किया था।

unacademy

राजा राममोहन राय ने फारसी भाषा में 'तोहफत-उल-मुवाहीदीन' (एकेश्वरवादियों को उपहार) का प्रकाशन किया, जिसमें उन्होंने एकेश्वरवाद के पक्ष में विवेकपूर्ण तर्क दिये।

- मुगल बादशाह अकबर द्वितीय ने राममोहन राय को 'राजा' की उपाधि प्रदान की थी।
- राजा राममोहन राय की मृत्यु 1833 में ब्रिटेन के ब्रिस्टल में हुई।
- राजा राममोहन राय के पश्चात् देवेंद्रनाथ टैगोर ने ब्रह्म समाज को कुशल नेतृत्व प्रदान किया। 1839 में उन्होंने 'तत्त्वबोधिनी सभा' की स्थापना की। तत्त्वबोधिनी सभा ने 'तत्त्वबोधिनी पत्रिका' के माध्यम से भारत के अतीत के सुव्यवस्थित अध्ययन को प्रोत्साहित किया।
- ब्रह्म समाज की शाखाएँ संयुक्त प्रांत, पंजाब तथा मद्रास में खोली गई। ब्रह्म समाज के विचारों को लेकर 1865 में केशवचंद्र सेन व देवेंद्रनाथ टैगोर के बीच विवाद हुआ, जिसके कारण केशवचंद्र सेन मूल ब्रह्म समाज से अलग हो गए और 1866 में आदि ब्रह्म समाज की स्थापना की। यही बाद में 'भारतीय ब्रह्म समाज' कहलाया ।
- 1868 में केशव चंद्र सेन ने 'टेबरेनेकल ऑफ न्यू डिस्पेंसेशन' नामक संघ की स्थापना की। 1870 में उन्होंने हिंदू पुनरुद्धार के प्रवक्ता के रूप में इंग्लैंड की यात्रा की। वहाँ से लौटने के उपरांत उन्होंने 'इंडियन रिफॉर्म एसोसिएशन' नामक संस्था का गठन किया।

unacademy

आचार्य सेन ने स्त्रियों के उद्धार, स्त्री शिक्षा आदि सामाजिक कार्योंके लिये योगदान दिया।

- 1872 में आचार्य केशव चंद्र सेन ने सरकार को ब्रह्म विवाह अधिनियम को कानूनी दर्जा दिलवाने हेतु तैयार कर लिया। 1872 में ब्रह्म विवाह अधिनियम पास किया गया, जिसमें 14 वर्ष से कम आयु की बालिकाओं तथा 18 वर्ष से कम आयु के बालकों का विवाह वर्जित कर दिया गया।
- ब्रह्म समाज का द्वितीय विभाजन 1878 में केशव चंद्र सेन के कारण हुआ। आचार्य केशव चंद्र सेन ने ब्रह्म विवाह अधिनियम-1872 का उल्लंघन करते हुए अपनी अल्पायु पुत्री का विवाह कूचबिहार के राजा से कर दिया, जो ब्रह्म समाज के द्वितीय विघटन का कारण बना।
- 1878 में ब्रह्म समाज से अलग हुए गुट (शिवनाथ शास्त्री, आनंद मोहन बोस और द्वारकानाथ गांगुली) ने 'साधारण ब्रह्म समाज' की स्थापना की, जिनका उद्देश्य था जाति प्रथा, मूर्ति पूजा का विरोध, नारी मुक्ति आदि का समर्थन करना ।

आधुनिक भारत में हिन्दू धर्म, समाज, या राजनीति में से चाहे कोई क्षेत्र हो उसमें सुधार लाने का सूत्रपात्र राजा राममोहन राय और उनके ब्रह्म समाज ने ही किया।
एच.सी. ई. जकारिया

मुझे कहते हुए दुःख होता है कि वर्तमान समय में हिन्दुओं की जो धार्मिक व्यवस्था है वह ऐसी नहीं है कि वो हिन्दुओं के राजनीतिक हितों का पक्षपोषण कर सके। इन परिस्थितियों में हिन्दू धर्म में कुछ परिवर्तन अपेक्षित हैं, जिससे हिन्दुओं को कुछ राजनीतिक लाभ एवं सामाजिक बल मिल सके।
राजा राममोहन राय

मानव सभ्यता का आदर्श अलग-अलग रहने में नहीं, बल्कि चिंतन तथा क्रिया के सभी क्षेत्रों में व्यक्तियों और राष्ट्रों के आपसी भाई-चारे में ही है।
राजा राममोहन राय

unacademy

प्रमुख विचार

ईश्वर की सच्ची उपासना वही है, जिससे न केवल उस व्यक्ति विशेष का अपितु समस्त मानव जाति का कल्याण हो सके।

केशवचंद्र सेन

हमारी मातृभूमि के लिये दो महान धर्मों की प्रणालियों हिन्दू तथा इस्लाम का संगम ही एकमात्र आशा है।

स्वामी विवेकानंद

जब तक करोड़ों लोग भूख और अज्ञान से पीड़ित हैं, तब तक मैं उस हर व्यक्ति को देशद्रोही समझूंगा जो उनके खर्च से शिक्षित बनकर उनके प्रति तनिक भी ध्यान नहीं देता।

स्वामी विवेकानंद

मत भूलो कि दलित, गरीब, अशिक्षित, चमार, भंगी एवं पिछड़े भी उसी हाड़-मांस के बने हुए हैं, जिससे कि सभ्य समाज के उच्च वर्ग के लोग।

स्वामी विवेकानंद

हम दोनों (हिन्दू और मुसलमान) भारत की हवा पर पलते हैं। हम गंगा और यमुना का पवित्र जल पीते हैं। हम दोनों इसी भूमि की पैदावार खाकर पलते हैं।.....हम दोनों एक ही देश के हैं और एक ही राष्ट्र के हैं। देश की प्रगति और भलाई हमारी एकता और प्रेम पर निर्भर है।

सर सैय्यद अहमद खां

unacademy

प्रार्थना समाज

महाराष्ट्र में 1867 में 'प्रार्थना समाज' की स्थापना हुई। इस संगठन का उद्देश्य हिंदू धर्म तथा समाज में सुधार लाना था। इसने एक ब्रह्म की उपासना का संदेश दिया और धर्म को जातिगत रूढ़िवादिता से मुक्त करने का प्रयास किया। प्रार्थना समाज की स्थापना डॉ. आत्माराम पांडुरंग ने की। बाद में आर. जी. भंडारकर तथा महादेव गोविंद रानाडे इस संगठन में शामिल हुए। इस समाज को प्रसिद्धि दिलाने का श्रेय रानाडे को ही जाता है। प्रार्थना समाज की स्थापना के प्रेरणा स्रोत केशव चंद्र सेन थे।

unacademy

- 1867 (कुछ स्रोतों में 1870) में रानाडे ने सार्वजनिक सभा की स्थापना की। इनकी तीक्ष्ण मेधाशक्ति के कारण इन्हें 'महाराष्ट्र का सुकरात' भी कहा जाता था। उन्होंने अछूतों, दलितों व पीड़ितों की दशा सुधारने के उद्देश्य से कल्याणकारी संस्थाओं का गठन किया, जैसे- विधवा आश्रम, रात्रि पाठशालाएँ आदि।
- रानाडे के प्रयत्नों से दक्कन एजुकेशनल सोसायटी की स्थापना हुई। दक्कन एजुकेशन सोसायटी के सदस्यों में तिलक, महादेव बल्लाल नामजोशी और विष्णुशास्त्री चिपलुकर भी शामिल थे। रानाडे द्वारा महाराष्ट्र विधवा पुनर्विवाह एसोसिएशन की स्थापना की गई। महिलाओं के कल्याण के लिये 'आर्य महिला समाज' की स्थापना पंडिता रमाबाई ने की थी। रानाडे के शिष्य गोपाल कृष्ण गोखले ने 'सर्वेट्स ऑफ इंडिया सोसायटी' (1905) की स्थापना की।
- प्रार्थना समाज के सिद्धांत और विचार भी ब्रह्म समाज के अनुरूप ही थे। इसने जाति प्रथा की समाप्ति, विधवाओं के पुनर्विवाह, नारी शिक्षा को बढ़ावा, बाल-विवाह के अंत आदि के पक्ष में प्रभावपूर्ण आवाज उठाई।
- प्रार्थना समाज धार्मिक गतिविधियों की अपेक्षा सामाजिक क्षेत्र में अधिक कार्यशील रहा और पश्चिमी भारत में समाज सुधार संबंधी विभिन्न क्रियाओं का केंद्र बना
- प्रार्थना सभा ने भारत के सामाजिक और धार्मिक सुधार की एक क्रमिक प्रक्रिया को आगे बढ़ाया। साथ ही इसने अपने बाद के संगठनों, जैसे- 'आर्य समाज' और 'रामकृष्ण मिशन' के लिये एक आधार का कार्य किया। इसके अतिरिक्त इसने भारतीय समाज की बुराइयों के प्रति सुधारवादी रवैया अपनाकर और इसकी अच्छाइयों को उभारकर पश्चिमी सभ्यता के अहम को तोड़ने और भारतीय सभ्यता को पुनः उसके पुराने स्थान पर स्थापित करने में सहायता की।

unacademy

आर्य समाज•

1875 में दयानंद सरस्वती ने बंबई में आर्य समाज की स्थापना की।1877 में आर्य समाज का मुख्यालय लाहौर में स्थापित किया गया।

• आर्य समाज की स्थापना का मुख्य उद्देश्य हिंदू धर्म में व्याप्त दोषों को उजागर कर उसे दूर करना, वैदिक धर्म को पुनः शुद्ध रूप में स्थापित करना, भारत को सामाजिक, धार्मिक व राजनीतिक रूप से एक सूत्र में बांधना था।

• दयानंद सरस्वती ने 'वेदों की ओर लोटों' का नारा देते हुए, वेदों को भारत का आधार स्तंभ बताया। उनका विश्वास था कि हिंदू धर्म व वेद, जिन पर भारत का पुरातन समाज टिका है, वे शाश्वत, अपरिवर्तनशील, धर्मातीत तथा देवीय हैं।

• दयानंद ने पुराणों जैसे हिंदू धर्म ग्रंथों को प्रामाणिकता को अस्वीकार किया। वर्ण व्यवस्था के स्थान पर उन्होंने कर्म के आधार को समर्थन दिया। सामाजिक व शैक्षिक मामलों में स्त्री-पुरुष के समान अधिकारों की वकालत की।

unacademy

• आर्य सामाजियों ने छुआछूत, जातिभेद, बाल-विवाह का विरोध किया तथा कुछ शर्तों के साथ विधवा पुनर्विवाह की अनुमति व अंतर्जातीय विवाह का समर्थन किया।
• आर्य समाज द्वारा चलाया गया 'शुद्धि आंदोलन' काफी विवादास्पद रहा। इसके अंतर्गत किसी कारणवश अन्य धर्म अपनाने वाले हिंदुओं को पुनः हिंदू धर्म में वापसी के लिये प्रोत्साहित किया गया।
• 'स्वेदशी व हिंदी' का समर्थन करने वाला यह प्रथम संगठन था। इसका मानना था कि "भारत भारतीयों के लिये है।"
• दयानंद सरस्वती ने 'गो रक्षा आंदोलन' चलाया। गायों की रक्षा हेतु 'गो रक्षा समिति' की स्थापना की।दयानंद सरस्वती ऐसे प्रथम समाज सुधारक थे, जिन्होंने शूद्रों व स्त्री को वेद पढ़ने, उच्च शिक्षा प्राप्त करने, यज्ञोपवीत धारण करने के पक्ष में आंदोलन चलाया।
• 1863 में उन्होंने बाह्य आंडबरों और झूठे धर्मों का खंडन करते हुए 'पाखंड-खंडिनी पताका' लहराया। दयानंद सरस्वती के विचार उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' में वर्णित हैं।दयानंद सरस्वती ने सर्वप्रथम 'स्वराज' शब्द का प्रयोग किया तथा हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया। बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और गोपाल कृष्ण गोखले जिन्होंने हमारे राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया, आर्य समाज से प्रभावित थे। राजनीति के क्षेत्र में उनका मत था कि "बुरे से बुरा देशी राज्य अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा है"।

unacademy

- वेलेंटाइन शिरोल (चिरोल) ने इस संगठन (आर्य समाज) को 'भारतीय अशांति का जन्मदाता' कहा था।.
- दयानंद सरस्वती के सहयोगी लाला हंसराज ने 1886 में दयानंद एंग्लो-वैदिक स्कूल (लाहौर) तथा स्वामी श्रद्धानंद ने 1902 में हरिद्वार के निकट कांगड़ी नामक स्थान पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की।

यंग बंगाल आंदोलन

19वीं सदी के तृतीय दशक के अंतिम वर्षों में बंगाल केबुद्धिजीवियों के मध्य एक रेडिकल ग्रुप संगठित हुआ, जिसकेविचार अधिक क्रांतिकारी थे। इस आंदोलन को 'यंग बंगालआंदोलन' के नाम से जाना जाता है। यंग बंगाल आंदोलन के प्रवर्तक हेनरी लुइस विवियन डेरोजियो थे।

- डेरोजियो फ्राँस की क्रांति से बहुत प्रभावित थे।
- समाज सुधार के लिये डेरोसियो ने 'एकेडमिक एसोसिएशन' और 'सोसायटी फॉर द एक्वीजीशन ऑफ जनरल नॉलेज' जैसे संगठनोंकी स्थापना की।
- रोकियो ने अपने समर्थकों को सत्य के लिये जीने और भरने, सभी सद्गुणों को अपनाने और उनके अनुसार आचरण करने हेतु प्रोत्साहित किया।

यंग बंगाल आंदोलन के मुख्य मुद्दे प्रेस की स्वतंत्रता, जमींदारों के अत्याचारों से रैयतों की सुरक्षा, सरकारी उच्च सेवाओं में भारतीयों को रोजगार दिलाना आदि थे।

- डेरोजियो के मुख्य शिष्यों में रामगोपाल घोष, कृष्ण मोहन बनर्जीएवं महेशचंद्र घोष थे।
- सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने डेरोजियो के अनुयायियों को 'बंगाल में आधुनिक सभ्यता के अग्रदूत', 'हमारी जाति का पिता' कहा।
- डेरोजियो को आधुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रवादी कवि' भीकहा जाताहै।
- यंग बंगाल आंदोलन का मूल संदर्भ देशी था, लेकिन इस पर विदेशी प्रभाव से इनकार नहीं किया जा सकता। यंग बंगाल के संस्थापक डेरोजियो स्वयं फ्रांस की क्रांति के सिद्धांतों से प्रभावित थे, साथ ही बंगाल के नौजवानों पर इटली के स्वतंत्रता आंदोलन का प्रभाव था।
- डेरोजियो ने समाचार पत्रों, पुस्तिकाओं और सार्वजनिक संगठनों के माध्यम से लोगों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर जागरूक करने के राजा राममोहन राय की परंपरा का अनुसरण किया। उन्होंने सार्वजनिक आंदोलन, जैसे- प्रेस की स्वतंत्रता, विदेश में ब्रिटिश उपनिवेशों में भारतीय श्रमिकों के लिये बेहतर। स्थिति, बहुमत वाली ज्यूरी द्वारा मुकदमों की सुनवाई और भारतीयों को सरकारी सेवाओं में उच्च पद जैसे मुद्दों पर खुलकर बहस की।

रामकृष्ण मिशन

- रामकृष्ण परमहंस के शिष्य विवेकानंद द्वारा रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1897 में कलकत्ता के समीप बारानगर में की गई।
- स्वामी विवेकानंद के बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्त था।
- रामकृष्ण मिशन की शिक्षाओं, उपनिषदों एवं गीता के दर्शन,बुद्धएवं यीशु के उपदेशों को आधार बनाकर विवेकानंद ने विश्व कोमानव मूल्यों की शिक्षा दी।
- 1893 में अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित प्रथम विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानंद ने भारत का नेतृत्व किया। इस सम्मेलन में जाने से पूर्व ही नरेंद्रनाथ दत्त का नाम बदलकर महाराज खेतड़ी के सुझाव पर स्वामी विवेकानंद रख दिया गया।
- विवेकानंद ने शिकागो में संपन्न 'विश्व धर्म सम्मेलन (1893)' में सभी धर्मों की एकता के विषय में कहा। उन्होंने अध्यात्मवाद एवं भौतिकतावाद के मध्य संतुलन स्थापित कर कहा कि- “यदि पश्चिम के भौतिकतावाद एवं पूर्व के अध्यात्मवाद का सम्मिश्रण कर दिया जाए तो यह मानव जाति की भलाई का सर्वोत्तम मार्ग होगा।"
- विवेकानंद का कहना था कि "धर्म न पुस्तकों में है, न बौद्धिक विकास में और न तर्क में; तर्क, सिद्धांत, पुस्तकें और धार्मिक क्रियाएँ आदि केवल धर्म के सहायक हैं, धर्म आत्म-ज्ञान में है। "

वे जातिवाद, छुआछूत एवं विषमता को राष्ट्र की दुर्बलता का कारक मानते थे। उन्होंने युवा पीढ़ी से अपील की कि वे प्राचीन सभ्यता पर गर्व करें, अपनी संस्कृति को मानव जाति के कल्याणार्थ समर्पित करें।

- विवेकानंद ने कहा कि "जब तक करोड़ों व्यक्ति भूखे और अज्ञानी हैं तब तक मैं उस प्रत्येक व्यक्ति को देशद्रोही मानता हूँ जो उन्हीं के खर्चे पर शिक्षा ग्रहण करता है परंतु उनकी परवाह बिल्कुल नहीं करता।
- स्वामीजी को 19वीं शताब्दी के नव हिंदू जागरण का संस्थापक भी कहा जाता है। सुभाष चंद्र बोस ने स्वामी विवेकानंद को "आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन का आध्यात्मिक पिता" कहा।
- स्वामी विवेकानंद ने प्रबुद्ध भारत (अंग्रेज़ी), उद्बोधन (बंगाली) नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन किया। राजयोग, ज्ञानयोग, कर्मयोग व वेदांत फिलॉसफी उनकी प्रसिद्ध पुस्तकें हैं।विवेकानंद से प्रभावित होकर एक विदेशी महिला इनके साथ भारतआई जो सिस्टर निवेदिता (मार्गरेट नोबल) के नाम से जानी जाती थीं।नोटः रामकृष्ण परमहंस ने चिंतन, संन्यास, भक्ति के परंपरागत तरीकों से धार्मिक मुक्ति प्राप्त करने का प्रयत्न किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इन मार्गों से सर्वश्रेष्ठ मार्ग मानव सेवा है। मानव सेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है।

थियोसोफिकल सोसायटी

_थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना 1875 में न्यूयॉर्क में मैडम हेलना पेट्रोवना ब्लावात्स्की तथा कर्नल हेनरी स्टली ऑल्कॉटने की थी।

• भारत में 1882 में थियोसोफिकल सोसायटी का अड्यार (मद्रास) में अंतर्राष्ट्रीय कार्यालय खोला गया।

• 1889 में एनी बेसेंट इस सोसायटी की इंग्लैंड में सदस्या बनीं। वह 1893 में भारत आई और उन्होंने सोसायटी का कार्यभार अपने हाथ में ले लिया। भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने में इनका अद्भुत योगदान रहा।

• थियोसॉफी (ब्रह्मविद्या) हिंदू धर्म के आध्यात्मिक दर्शन, उसके धर्म सिद्धांत तथा आत्मा के पुनर्जन्म सिद्धांत का समर्थन करती है।

• थियोसोफिकल सोसायटी पुनर्जन्म व कर्म के सिद्धांत को मान्यतादेती थी। इस संस्थान ने बाल विवाह, जातिवाद का विरोध तथाविधवाओं की दशा सुधारने का प्रयास किया।

• भारत में शिक्षा के क्षेत्र में विकास के लिये एनी बेसेंट 1898 में सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना की जो 1916 में मदनमोहन मालवीय जी के प्रयासों से 'बनारस हिंदू विश्वविद्यालय' बना।एनी बेसेंट ने आयरलैंड की होमरूल के नमूने पर भारत में होमरूल लीग आंदोलन का नेतृत्व किया और 1917 में कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष बनीं।

किसे राष्ट्रवाद का पैगंबर माना जाता है?
1. एम के गाँधी
2.राम मोहन राय
3.रबिन्द्र नाथ टैगोर
4. दयानंद सरस्वती
5. उपरोक्त में से कोई नहीं / उपर्युक्त में से एक से अधिक

सही उत्तर राम मोहन राय है।

- राम मोहन राय को राष्ट्रवाद का पैगंबर माना जाता है।
- वह एक अथक समाज सुधारक हैं जिन्होंने भारत में प्रबोधन और उदार सुधारवादी आधुनिकीकरण युग का उद्घाटन किया।

Key Points

- राजा राम मोहन राय को भारतीय राष्ट्रवाद के जनक के रूप में जाना जाता है।उन्हें भारतीय पुनर्जागरण के पिता और भारतीय राष्ट्रवाद का पैगंबर भी माना जाता है।
- राम मोहन राय को दिल्ली के मुगल बादशाह अकबर । ने 'राजा' की उपाधि दी थी।

राजा राममोहन राय ने पहला बंगाली भाषा का साप्ताहिक अखबार और भारतीय भाषा का पहला

- राय ने हिंदू एकेश्वरवाद की शिक्षाओं का प्रसार करने के लिए वेदांत कॉलेज की स्थापना की।अखबार शुरू किया।गोपाल कृष्ण गोखले ने राय को 'आधुनिक भारत का जनक' कहा।

unacademy

Additional Information

गांधी एक समाज सुधारक और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के नेता थे।जिन्होंने सत्याग्रह नामक अहिंसक प्रतिरोध के विचार का परिचय दिया। रवींद्रनाथ टैगोर ने मोहनदास करमचंद गांधी को "महात्मा" की उपाधि दी।महात्मा गांधी ने रवीन्द्र नाथ टैगोर को गुरुदेव की उपाधि दी।दयानंद सरस्वती आर्य समाज के संस्थापक है।

- और उन्होंने वैदिक धर्म नामक एक सुधार आंदोलन का गठन किया।वह 1876 में स्वराज "भारत भारतीयों के लिए" के रूप में नारा देने वाले पहले व्यक्ति थे।

unacademy

देवेन्द्र नाथ टैगोर द्वारा तत्वबोधिनी सभा की स्थापना कब की गई थी ?

1. 1839
2. 1845
3. 1832
4. 1854

सही उत्तर 1839 है

Key Points

तत्त्वबोधिनी सभा की स्थापना देवेन्द्रनाथ टैगोर ने की थी।

- 6 अक्टूबर, 1839 को देवेन्द्रनाथ ने तत्वरंजिनी सभा की स्थापना की जिसका नाम बदलकर'तत्वबोधिनी सभा' कर दिया गया।
- सभा का उद्देश्य वेदांत और उपनिषदों पर आधारित हिंदू धर्म के तर्कसंगत और मानवतावादी रूप को
- तत्त्वबोधिनी सभा कलकत्ता में शुरू किया गया एक समूह था बढ़ावा देना था।
- यह ब्रह्म समाज, हिंदू धर्म और भारतीय समाज के सुधारकों का एक गुट समूह है।1828 में राजा राम मोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना की।देवेन्द्रनाथ टैगोर ने एक पाठ का संकलन "ब्रह्म धर्म" के रूप में किया।

unacademy

निम्नलिखित में से 'स्वाभिमान आंदोलन' की स्थापना किसने की?

1. ई. वी. रामास्वामी या पेरियार
2. श्री नारायण गुरु
3. बी. आर. अम्बेडकर
4. स्वामी विवेकानन्द
5. उपर्युक्त में से कोई नहीं / उपर्युक्त में एक से अधिक

ई. वी. रामास्वामी या पेरियार ने स्वाभिमान आंदोलन की स्थापना की।.

Points

ई.वी. रामास्वामी नायकर, या पेरियार, जैसा कि उन्हें कहा जाता था, एक मध्यमवर्गीय परिवार से थे। वे अपने प्रारंभिक जीवन में एक तपस्वी थे और उन्होंने संस्कृत शास्त्रों का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया था।

- बाद में, वह कांग्रेस के सदस्य बन गए, केवल घृणा में छोड़ने के लिए जब उन्होंने पाया कि राष्ट्रवादियों द्वारा आयोजित एक दावत में, बैठने की व्यवस्था जाति भेद का पालन करती है यानी निचली जातियोंको उच्च जातियों से दूरी पर बैठने के लिए बनाया गया था।
- यह मानते हुए कि अछूतों को अपनी गरिमा के लिए लड़ना होगा, पेरियार ने स्वाभिमान आंदोलन कीस्थापना की। उन्होंने तर्क दिया कि अछूत एक मूल तमिल और द्रविड़ संस्कृति के सच्चे समर्थक थे, जिसे ब्राह्मणों ने .अपने अधीन कर लिया था। उन्होंने महसूस किया कि सभी धार्मिक अधिकारियों ने सामाजिक विभाजन और असमानता को ईश्वर प्रदत्त के रूप में देखा।
- अतः अछूतों को सामाजिक समानता प्राप्त करने के लिए स्वयं को सभी धर्मों से मुक्त करना पड़ा। पेरियार हिंदू धर्मग्रंथों के मुखर आलोचक थे, विशेष रूप से मनु-संहिता, प्राचीन कानूनविद, और भगवद गीता और रामायण |
- उन्होंने कहा कि इन ग्रंथों का इस्तेमाल निचली जातियों पर ब्राह्मणों के अधिकार और महिलाओं पर पुरुषों के वर्चस्व को स्थापित करने के लिए किया गया था।

Additional Information

- श्री नारायण गुरु ने 1902 में श्री नारायण धर्म परिपालन योगम या SNDP आंदोलन की स्थापना की। बी. आर. अंबेडकर ने 1927 में मंदिर प्रवेश आंदोलन शुरू किया, जिसमें उनके महार जाति केअनुयायियों ने भाग लिया। स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरु की शिक्षाओं का प्रचार करने के लिए 1897 में रामकृष्ण मिशन की

unacademy

बंगाल में सामाजिक-धार्मिक सुधारों में अग्रदूत "आत्मीय सभा" की स्थापना किसने की ?

1. विवेकानंद
2. दयानंद सरस्वती
3. राजा राम मोहन राय
4. अरबिंदो

सही उत्तर विकल्प राजा राम मोहन राय है।

Key Points

- राजा राम मोहन राय ने कोलकाता में वर्ष 1814 में बंगाल में सामाजिक-धार्मिक सुधारों में एक अग्रदूत संगठन "आत्मीय सभा" की स्थापना की।
- यह एक दार्शनिक चर्चा मंडली थी जहाँ सामाजिक सुधारों के लिए विचारों की ओर अग्रसर होने वाली बहसें और चर्चाएँ होती थीं।

unacademy

निम्नलिखित सुधारकों में से किसने "आर्य समाज" की स्थापना की?

1. राजा राम मोहन राय
2. स्वामी दयानंद सरस्वती
3. आत्माराम पांडुरंग
4. ईश्वरचंद्र विद्यासागर

सही उत्तर स्वामी दयानंद सरस्वती है।

Key Points

आर्य समाज एक एकेश्वरवादी भारतीय हिंदू सुधार आंदोलन है जो वेदों के अचूक अधिकार में विश्वास के आधार पर मूल्यों और प्रथाओं को बढ़ावा देता है।

- आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 में बॉम्बे में की थी। आर्य समाज से संबंधित 10 सिद्धांत हैं।प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय उनके शिष्य थे।
- स्वामी दयानंद सरस्वती को 'ग्रैंडफादर ऑफ़ इंडियन नेशन' के रूप में जाना जाता है।
- स्वामी दयानंद सरस्वती का मूल नाम मूल शंकर।

Additional Information

राजा राम मोहन राय

• राजा राम मोहन राय को 'भारतीय पुनर्जागरण के पिता' के रूप में जाना जाता है। उन्हें 'भारतीय राष्ट्रवाद के पैगंबर' के रूप में भी जाना जाता है। उन्होंने 1814 में आत्मीय सभा और 1828 में ब्रह्म समाज की शुरुआत की।

• उन्होंने अपनी पत्रिकाओं संबाद कौमुदी (1821) और प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस (1820) के माध्यम से सती के उन्मूलन के लिए आंदोलन चलाया।

• मुगल सम्राट अकबर द्वितीय ने राम मोहन राय को 'राजा' की उपाधि दी।

आत्माराम पांडुरंग

• प्रार्थना समाज की स्थापना 1867 में बॉम्बे में आत्माराम पांडुरंग ने की थी। • वह बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के दो भारतीय सह-संस्थापकों में से एक थे।• आत्माराम पांडुरंग ने 1879 में बॉम्बे के शेरिफ के रूप में संक्षिप्त सेवा की।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर

• ईश्वर चंद्र विद्यासागर एक भारतीय शिक्षक और समाज सुधारक थे जिन्हें 'बंगाली गद्य का जनक' मानाजाता था। ऐसे मुद्दों के प्रति ईश्वर चंद्र विद्यासागर का योगदान, विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 में पारित

unacademy

निम्नलिखित में से किसने बंगाल की रॉयल एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की ?

1. विलियम जोन्स
2. लॉर्ड कार्नवालिस
3. जॉन शोर
4. वारेन हेस्टिंग्स

सही उत्तर विलियम जोन्स है।

• सर विलियम जोन्स एक एंग्लो-वेल्श दार्शनिक थे, जो बंगाल के फोर्ट विलियम में सुप्रीम कोर्ट ऑफ़ ज्यूडिशियरी के न्यायाधीश और प्राचीन भारत के विद्वान थे। एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना 1784 में सर विलियम जोन्स ने की थी। यह एक अनूठी संस्था है जो सभी साहित्यिक और वैज्ञानिक गतिविधियों के एक फाउंटेनहेड के रूप में कार्य करती है।

• 1832 में इसका नाम बदलकर "द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल" रख दिया गया और 1936 मेंफिर से इसका नाम बदलकर "द रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल " रख दिया गया।

Key Points

• यह एशियाई अध्ययन के लिए एक केंद्र के रूप में कल्पना की गई थी जिसमें महाद्वीप की भौगोलिक सीमाओं के भीतर आदमी और प्रकृति के विषय में सब कुछ शामिल था। यह कोलकाता में स्थित है। एशियाटिक सोसाइटी के पुस्तकालय में दुनिया की सभी प्रमुख भाषाओं की लगभग 1,17,000 .पुस्तकों और 79,000 पत्रिकाओं का विशाल संग्रह है। एशियाटिक सोसाइटी के संग्रहालय की स्थापना 1814 में एन. वालिच ने की थी।

राजा राम मोहन राय ने ब्रह्मो सभा नामक एक सुधार संघ की स्थापना की जिसे बाद में..... रूप में जाना गया था।

1.देव समाज
2. आर्य समाज
3. ब्रह्मो विद्यालय
4. ब्रह्मो समाज

सही उत्तर ब्रह्मो समाज है।

Key Points

ब्रह्मो समाज की स्थापना 1828 में राजा राम मोहन राय ने की थी।

• 1828 में कलकत्ता में बंगालियों की बैठकों के बीच आंदोलन शुरू हुआ था। केशव चंद्र सेन और देवेंद्रनाथ टैगोर के बीच संघर्ष 1865 में व्यापक हो गया था जब टैगोर ने ब्रह्मोस को अपने पवित्र धागे पहनने के लिए सेवाओं का संचालन करने की अनुमति दी थी।केशव ने इस फैसले पर आपत्ति जताई और अपने अनुयायियों सहित ब्रह्मो समाज से अलग हो गए थे।उन्होंने 15 नवंबर 1866 को भारत के ब्रह्मो समाज की स्थापना की थी।जबकि दूसरी ओर टैगोर ने स्वयं को आदि ब्रह्मो समाज में संगठित कर लिया था।

Additional Information

ब्रह्मो समाज का मुख्य एजेंडा हिंदू धर्म को शुद्ध करना और एकेश्वरवाद सिखाना है।

ब्रह्मो समाज के आदर्श कारण और वेद और उपनिषद के जुड़वां स्तंभों पर निर्भर थे।

unacademy

'वेदों की ओर लौट चलो' का नारा किसने दिया था?

1. महात्मा गाँधी
2. गुरु नानक देव
3. दयानंद सरस्वती
4. भीमराव अम्बेडकर

unacademy

सही उत्तर दयानंद सरस्वती है।

Key Points

स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की। उन्होंने "वेदों की ओर लौट चलो" का नारा दिया।आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 में की थी।उन्होंने वेदों का अनुवाद किया और सत्यार्थ प्रकाश, वेद भाष्य भूमिका और वेद भाष्य नामक तीन पुस्तकें दयानंद आंग्ल वैदिक (D.A.V) स्कूल उनके दर्शन और शिक्षाओं के आधार पर स्थापित किए गए थे।

unacademy

1829 में सती प्रथा को प्रतिबंधित करवाने में किसका अहम योगदान था?

1. राजा राममोहन रॉय
2. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर
3. ज्योतिराव फुले
4. स्वामी दयानंद सरस्वती

राजा राममोहन राय ने 1829 में सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाने में योगदान दिया था।

Key Points.

सती प्रथा एक हिंदू महिला को उसके पति की चिता में उसके पति की मृत्यु पर आहुति देने की प्रथा थी। विधवा को स्वर्ग जाना था और यह एक महिला की अपने पति के प्रति समर्पण का अंतिम बलिदान और प्रमाण माना जाता था।

- बंगाल के महान हिंदू सुधारक राजा राममोहन राय ने बंगाल के हिंदू समाज में प्रचलित कई सामाजिक बुराइयों से लड़ाई लड़ी और सती प्रथा उन प्रमुखों में से एक थी।
- वह अपनी ही भाभी की आहुति के प्रत्यक्ष गवाह थे। उन्होंने 1812 में इस प्रथा के खिलाफ अपना संघर्ष शुरू किया।
- राजा राममोहन राय सती के खिलाफ एक मुखर प्रचारक थे। उन्होंने तर्क दिया कि वेदों और अन्य प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथों ने सती प्रथा को मंजूरी नहीं दी।उन्होंने अपनी पत्रिका संवाद कौमुदी में इसके निषेध की वकालत करते हुए लेख लिखे। उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी प्रशासन से इस प्रथा पर प्रतिबंध लगाने पर जोर दिया।लॉर्ड विलियम बेंटिक 1828 में भारत के गवर्नर-जनरल बने। उन्होंने सती, बहु-विवाह, बाल-विवाह और कन्या भ्रूण हत्या जैसी कई प्रचलित सामाजिक बुराइयों को दबाने में राजा राममोहन राय की मदद की।
- लॉर्ड बेंटिक ने पूरे ब्रिटिश भारत में सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाने वाला कानून पारित किया और इस अधिनियम के द्वारा सती प्रथा को 1829 में अदालतों द्वारा अवैध और दंडनीय बना दिया गया।

निम्नलिखित में से किसने अस्पृश्यता को दूर करने के लिए अपने रचनात्मक कार्यक्रम के एक भाग के रूप में हरिजन सेवक संघ को संगठित किया?

1. बीआर अम्बेडकर
2. पेरियार ईवीआर
3. नारायण गुरु
4. महात्मा गाँधी

सही उत्तर महात्मा गांधी है।

- महात्मा गांधी द्वारा 1932 में हरिजन सेवक संघ का आयोजन अस्पृश्यता को दूर करने के लिए उनके रचनात्मक कार्यक्रम के एक भाग के रूप में किया गया था।

Key Points

- महात्मा गांधी द्वारा पहले इसका मूल संगठन 30 सितंबर 1932 को स्थापित अखिल भारतीयविरोधी अस्पृश्यता लीग था।
- बाद में इसका नाम बदलकर हरिजन सेवक संघ कर दिया गया।इसके पहले अध्यक्ष घनश्याम दास बिड़ला थे और सचिव अमृतलाल ताक्कर थे। यह अभी भी एक गैर सरकारी संगठन के रूप में मौजूद है जो हरिजन या दलित लोगों के कल्याण के लिए काम कर रहा है और डिप्रेस्ड क्लास ऑफ इंडिया का उत्थान कर रहा है।

unacademy

राजा राम मोहन राय के प्रयासों से बंगाल में सती प्रथा को किस अधिनियम के तहत प्रतिबंधित किया गया था

1. विनियमन XVII AD 1829
2. विनियमन XX AD 1831
3. विनियमन XVIII AD 1856
4. विनियमन XIX AD 1829

unacademy

सती प्रथा एक हिंदू महिला को उसके पति की चिंता में उसके पति की मृत्यु पर आहुति देने की प्रथा थी।हालाँकि इस प्रथा की कोई वैदिक मान्यता नहीं है, लेकिन यह भारत के कुछ हिस्सों में प्रचलित हो गई थी। विधवा को स्वर्ग जाना था और यह एक महिला की अपने पति के प्रति समर्पण का अंतिम बलिदान औरप्रमाण माना जाता था।

- सती के कई मामले स्वैच्छिक थे जबकि कुछ को मजबूर किया गया था।

Important Points

सती प्रथा का उन्मूलन (1829):

- बंगाल के महान हिंदू सुधारक राजा राममोहन राय ने बंगाल के हिंदू समाज में प्रचलित कई सामाजिक बुराइयों से लड़ाई लड़ी और सती प्रथा प्रमुखों में से एक थी। उन्होंने अपनी ही भाभी की लॉइव हत्या देखी थी। उन्होंने 1812 में इस प्रथा के खिलाफ अपना संघर्षशुरू किया।
- एक अंग्रेज मिशनरी विलियम कैरी ने भी इस बर्बर प्रथा के खिलाफ लड़ाई लड़ी। अकेले वर्ष 1817 में लगभग 700 विधवाओं को जिंदा जला दिया गया था।भले ही अंग्रेजों ने शुरू में इसकी अनुमति दी थी, लेकिन पहली बार 1798 में कलकत्ता में इसे प्रतिबंधितकर दिया गया था। हालांकि, आसपास के क्षेत्रों में यह प्रथा जारी रही।
- राजा राममोहन राय सती (जिसे सुती भी कहते हैं) के खिलाफ एक मुखर प्रचारक थे। उन्होंने तर्क दियाकि वेदों और अन्य प्राचीन हिंदू धर्मग्रंथों ने सती को मंजूरी नहीं दी। उन्होंने अपनी पत्रिका सांबद कौमुदी में इसके निषेध की वकालत करते हुए लेख लिखे। उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी प्रशासन से इस प्रथा पर प्रतिबंध लगाने पर जोर दिया। लॉर्ड विलियम बेंटिक 1828 में भारत के गवर्नर-जनरल बने। उन्होंने सती, बहुविवाह, बाल विवाह और कन्या भ्रूण हत्या जैसी कई प्रचलित सामाजिक बुराइयों को दबाने में राजा राममोहन राय कीमदद की।
- लॉर्ड बेंटिक ने ब्रिटिश भारत में कंपनी के अधिकार क्षेत्र में सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाने वाला कानून पारित किया।

बंगाल संहिता का सतीविनियमन XVII AD 1829:

- "सुत्ती की प्रथा, या हिंदुओं की विधवाओं को जिंदा जलाने या दफनाने की प्रथा, मानव स्वभाव की भावनाओं के विरुद्ध हैं, यह हिंदुओं के धर्म द्वारा अनिवार्य कर्तव्य के रूप में कहीं भी शामिल नहीं है, इसके विपरीत, पवित्रता का जीवन और विधवा की ओर से सेवानिवृत्ति अधिक विशेष रूप से और अधिमानतः निहित है, और पूरे भारत में अधिकांश लोगों द्वारा इस प्रथा को नहीं रखा जाता है, न ही मनाया जाता है: कुछ व्यापक जिलों में यह मौजूद नहीं हैं जिनमें यह किया गया है सबसे अधिक बार, यह कुख्यात है कि कई मामलों में अत्याचार के कृत्यों को अंजाम दिया गया है जो स्वयं हिंदुओं के लिए चौंकाने वाला रहा हूँ, और उनकी नजर में गैरकानूनी और दृष्ट... 12 हिंदुओं की विधवाओं को सूती या जलाने या जिंदा दफनाने की प्रथा, इसके द्वारा अवैध घोषित किया जाता है, और आपराधिक अदालतों द्वारा दंडनीय घोषित किया जाता है।'

हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1856, जिसे अधिनियम XV, 1856 के रूप में भी जाना जाता है, 26 जुलाई 1856 को अधिनियमित किया गया था, जिसे लॉर्ड .द्वारा पारित किया गया था।

1. हार्डिंग
2. ऑकलैंड
3. कैनिंग
4. मेटकाल्फ

सही उत्तर कैनिंग है।

- हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 ने 16 जुलाई 1856 को हिंदू विधवाओं के पुनर्विवाह को वैध कर दिया। यह अधिनियम 26 जुलाई 1856 को अधिनियमित किया गया था।
- इस विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 के कार्यान्वयन के समय; लॉर्ड कैनिंग भारत के गवर्नर जनरल थे।
- इस अधिनियम का मसौदा लॉर्ड डलहौजी ने तैयार किया था।ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने अधिनियम की स्थापना में एक प्रमुख भूमिका निभाई।

Key Points

हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 कीमुख्य विशेषताएं:

- इस अधिनियम ने विधवाओं से विवाह करने वाले पुरुषों को कानूनी सुरक्षा प्रदान की।
- 1856 के हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम ने हिंदू विधवा के पुनर्विवाह के लिए विरासत रूपों के नुकसान के खिलाफ कानूनी सुरक्षा प्रदान की।के

कुछ- विधवा को अपने मृत पति से प्राप्त किसी भी विरासत को जब्त करने के लिए अधिकृत किया गया था।

- कानून लागू होने के बाद पहली विधवा पुनर्विवाह 7 दिसंबर 1856 को उत्तरी कलकत्ता में हुआथा।

आत्मीय सभा के संस्थापक कौन थे?

1. मोतीलाल नेहरू
2. चित्तरंजन दास
3. राजकुमार द्वारकानाथ टैगोर
4. राजा राम मोहन राय

unacademy

सही उत्तर है राजा राम मोहन राय है।

Key Points

आत्मीय सभा

- 1814 में, राजा राम मोहन राय ने आत्मीय सभा का गठन किया
  यह एक दार्शनिक चर्चा का मंच था।
  सभा का मुख्य उद्देश्य एकेश्वरवादी हिंदू वेदांतवाद पर चर्चा और बहस सत्र आयोजित करना था।1
  इसका गठन समाज में सामाजिक और धार्मिक सुधारों को शुरू करने के लिए किया गया था।
- राजा राम मोहन राय ब्रह्म समाज के संस्थापक थे।
- उन्होंने सती प्रथा को समाप्त करने में प्रमुख भूमिका निभाई।
- मुगल बादशाह अकबर द्वितीय ने उन्हें राजा की उपाधि दी थी।
- उन्हें बंगाल पुनर्जागरण का जनक माना जाता है।

Additional Information.

चित्तरंजन दासमोतीलाल नेहरू

- वह भारत के पहले प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू के पिता थे।

उन्होंने नेहरू रिपोर्ट प्रस्तुत की, भारतीयों द्वारा लिखित पहला संविधान केवल ब्रिटिश साम्राज्य केभीतर भारत के लिए प्रभुत्व की स्थिति की मांग करता था।

- उन्होंने चितरंजन दास के साथ स्वराज पार्टी की स्थापना की और वे पार्टी के सचिव थे।
- उन्हें देशबंधु के नाम से जाना जाता था।
- उन्होंने मोतीलाल नेहरू के साथ स्वराज पार्टी की स्थापना की और वे पार्टी के अध्यक्ष थे।राजकुमार द्वारकानाथ टैगोर वह ब्रिटिश पार्टनर्स के साथ एक उद्यम बनाने वाले पहले भारतीय उद्योगपति थे।
- वह रवींद्र नाथ टैगोर के दादा थे। वह टैगोर परिवार की जोरासांको शाखा के संस्थापक थे।